



पवमान

(मासिक)

वर्ष : 34

भाद्रपद-अश्विन

वि०स० 2079

अंक : 9

सितम्बर 2022

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून

वजन: 50 ग्राम



सरदार भगत सिंह



पं. रामप्रसाद बिसमिल्ल



अशुफाकउल्ला खान



चन्द्रशेखर आजाद



सरदार ऊधमसिंह



रयामजी कृष्ण वर्मा

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008



Transforming the way businesses communicate & interact with their customers

Karix empowers organisations to enable smarter, relevant, and personalised conversations with their customers and create seamless customer experiences, across the globe. Purpose-built for enterprises, Karix offers a rich suite of communication channels with superior security standards, unmatched customer support and a reliable cloud-based platform to support all communication needs.

21+

years of industry experience with a stronghold in all major industries

2,000+

Enterprise customers

100+ BN

Omni-channel messages processed annually

24x7

Support provided by over 200 engineers

10,000+

Business processes supported

CUSTOMER ENGAGEMENT SOLUTIONS SUITE



WhatsApp



A2P Messaging



Email



RCS



Voice



Marketing Automation



Campaign Automation



Chatbots



Live Agent Chat

WHY DO FORTUNE 1000 BUSINESSES PREFER KARIX?



Best in class connectivity



High available systems



Hybrid cloud infrastructure



Deep domain understanding

For more details, visit us at www.karix.com or write to us at marketing@karix.com



वर्ष-34

अंक-9

भाद्रपद-अश्विन 2079 विक्रमी सितम्बर 2022
सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123 दयानन्दाब्द : 198



—: संरक्षक :—

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती
मो. : 9410102568



—: अध्यक्ष :—

श्री विजय कुमार
मो. : 9837444469



—: सचिव :—

प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586



—: आद्य सम्पादक :—
स्व० श्री देवदत्त बाली



—: मुख्य सम्पादक :—
डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक

मो. : 9336225967



—: सहायक सम्पादक :—
अवैतनिक

मनमोहन कुमार आर्य—
मो. : 9412985121



—: कार्यालय :—

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून-248008

दूरभाष : 0135-2787001

मोबाईल : 7895978734 (श्री चन्दन सिंह)

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार	3
वेदविहित नहीं है यज्ञ में पशुबलि	डा. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	4
सत्य और अहिंसा का सिद्धान्त वेदों की देन	मनमोहन कुमार आर्य	8
अच्छाई को फौरन अमल में लाना ही फायदेमंद	सीताराम गुप्ता	10
ऋषि दयानन्द ने आर्यभाषा हिन्दी को ऋषियों...	मनमोहन कुमार आर्य	12
वृद्धावस्था के रोग तथा उनके आयुर्वेदिक...	स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती	19
आर्य समाज के आज के गौरव स्वामी धर्मानन्द सरस्वती		22
आयुर्वेदानुसारी स्वास्थ्यरक्षक आरोग्य सूत्र	आचार्य बालकृष्ण	24
कल्कि अवतार समाज में फैला महाझूट और...	डा० डी. के. गर्ग	27

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शूल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
3. 'तपोवन विद्या निकेतन'	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

- | | |
|------------------------------|-----------------------|
| 1. कलर्ड फुल पेज | रु. 5000 /— प्रति माह |
| 2. ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज | रु. 2000 /— प्रति माह |
| 3. ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज | रु. 1000 /— प्रति माह |

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

- | | |
|---------------------------------|--------------------|
| 1. वार्षिक मूल्य | रु. 200 /— वार्षिक |
| 2. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य | रु. 2000 /— |

नोट: पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।



सम्पादकीय

वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति का वास्तविक अर्थ

वैदिकी हिंसा का अर्थ निहित स्वार्थ, पूर्वाग्रह और मिथ्याज्ञान के कारण अटपटा निकाल लिया गया है। यज्ञों में पशुओं की हिंसा करते हुए कहा गया कि 'यह हिंसा वेदोक्त है, इसलिए इसमें कोई दोष नहीं है।' यह अर्थ किसी भी प्रकार बुद्धि संगत नहीं है। सही अर्थ समझने के लिए पूर्वाग्रहों से हटकर विचार करना आवश्यक है। पहला विचारणीय शब्द है 'वैदिकी'। वैदिकी का अर्थ होता है-वेद विज्ञान अथवा वेद विहित अनुशासन। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान होता है। वेद ज्ञान ईश्वर प्रदत्त होने के कारण सर्वोच्च ज्ञान कहा गया है। मध्यकाल में मनुष्यों में मांस भक्षण की प्रवृत्ति बढ़ जाने से सात्विक द्रव्य-यज्ञों में भी पशु हिंसा की बात चल पड़ी। इसके लिये अनेक उपाय किये गये। वेदेतर साहित्य में यत्र-तत्र प्रक्षेप द्वारा पशुहिंसा परक विधान कर लिए गये। मनुस्मृति जैसे महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक धर्मशास्त्र को भी नहीं छोड़ा गया और उसके अध्याय ५ के श्लोकों में इस बात के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जहाँ कहा गया है कि यज्ञ में किया जाने वाला पशुबध वध नहीं है-तस्माद् यज्ञे वधोबधः। इसी आधार पर पीछे यह कहावत चल पड़ी-वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति। निश्चित रूप से उक्त वाक्य का अर्थ हिंसा के समर्थन में नहीं हो सकता है। वैदिक कर्मकाण्ड में यज्ञ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वेद में यज्ञ का एक पर्याय शब्द 'अध्वर' है। इसका अर्थ होता है-वह कर्म, जिसमें हिंसा न होती हो। यज्ञकुण्ड और यज्ञशाला के निर्माण हेतु भूमि की खुदाई की जाती है, सावधानी पूर्वक प्रवृत्त होते हुए भी अत्यंत अल्प ज्ञान के धारक पृथिवी में स्थित जीवों का वध हो जाना अनिवार्य है जिससे असंख्य भूमिगत कीटों का नाश होता है। इसी प्रकार यज्ञ करते समय अत्यन्त सावधानी बरतने के बावजूद हवन और दीपों की अग्नि में कीट-पतंगों की मृत्यु हो जाती है। इसको बचाने के लिये यज्ञकुण्ड के चारों ओर जल सिंचन भी वेद-मन्त्रों के साथ किया जाता है। इसके बावजूद कीट-पतंगों आदि की हिंसा की सम्भावना सदैव बनी रहती है। इसीलिये कहा गया है कि वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति। क्योंकि यहाँ पर याज्ञिक का हिंसा करने का कोई प्रयोजन या उद्देश्य नहीं रहता है, अपितु भूलवश या प्राकृतिक कारणों से जीवों की हिंसा हो जाती है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वेदों में मन्त्रों के माध्यम से पशुहिंसा आदि का वर्णन किया गया है। वेद में हिंसा का आरोप लगाने के पीछे सायण, उब्बट, महिधर आदि वेदभाष्यकारों का अज्ञानतापूर्ण भाष्य करते हुए वेद में पशुबलि का उल्लेख करना या वाममार्गियों से प्रभावित होकर मांसभक्षण के लालच में पड़कर यज्ञों में जानबूझकर पशुबलि का विधान करना रहा है। अथर्ववेद के मन्त्र संख्या २-३४-२ में आए 'पाथ' पद का अर्थ मरते हुए पशु का मांस ग्रहण करते हैं और इस अर्थ में सायण ने मरते तड़पते पशु के प्राणों से यजमान के लिए स्वर्ग के मार्ग बनाने की आशा की है और पशुमांस को देवों का प्रिय बतलाया है, जबकि 'पाथ' का अर्थ अन्न है। ऐसे ही अन्य अनेक उदाहरण वेद और वैदिक साहित्य में मिलते हैं। वेद में हिंसा नहीं-विषयक अंक सुधी पाठकों की सेवामें प्रस्तुत है।

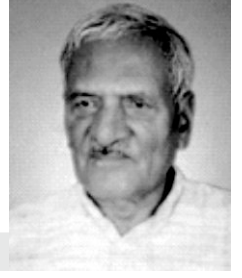
वेदामृत

‘सुमित्र सोम’

गयस्फानो अमीवहा, वसुवित् पुष्टिवर्धनः।

सुमित्रः सोम नो भव॥

ऋग्वेद 1.91.2



ऋषिः गोतमः राहूगणः। देवता सोमः। छन्दः गायत्री।।

(सोम) हे चन्द्रवत् वृद्धि और पुष्टि प्रदान करनेवाले परमेश्वर! [तू] (गयस्फानः) गृह, सन्तान, धन, प्राण की वृद्धि करनेवाला, (अमीव—हा) अविद्या व रोगों का हन्ता, (वसुवित्) आत्मिक ऐश्वर्य प्राप्त करानेवाला, (पुष्टि—वर्धनः) पुष्टि को बढ़ानेवाला (नः) हमारा (सुमित्रः) सुमित्र (भव) हो जा।

हे सोम प्रभु! हे चन्द्र के समान वृद्धि और पुष्टि प्रदान करनेवाले देव! तुम हमारे सुमित्र हो जाओ। सुमैत्री का निर्वाह करने के लिए सर्वप्रथम तुम हमारे लिए ‘गयस्फान’ बनो, हमारे गृह, सन्तान, धन और प्राणों को बढ़ाओ। घर के विषय में हमारी भावना बड़ी संकुचित है। हम दो—चार—छह सदस्यों के परिवार को ही घर समझते हैं। तुम हमारे घर की सीमा को शनैः—शनैः बड़ा करते हुए हमें इस स्थिति तक पहुंचा दो कि हम सारी वसुधा को ही अपना कुटुम्ब समझने लगे। हमारी सन्तान को भी बढ़ाओ, केवल दो—चार को ही हम अपनी सन्तान न मानकर समाज के सब बच्चों में सन्तान की भावना करने लगे। हमारे धन को भी बढ़ाओ, हम सार्वजनिक या राष्ट्रिय धन को अपना धन मानकर उसकी सुरक्षा की चिन्ता रखें। हमारे प्राणों को भी बढ़ाओ, अन्य प्राणियों में भी हमारे ही प्राण हैं यह बुद्धि अपने अन्दर उत्पन्न कर उन प्राणियों को भी हम अपने ही समान प्यार करने लगे। साथ ही सन्तान को विद्या, यश आदि से बढ़ाओ, हमारे धन को प्रचुरता की दृष्टि से बढ़ाओ, हमारे प्राणों को प्राणन, अपानन आदि शक्तियों से बढ़ाओ। तुम हमारे लिए ‘अमीवहा’ बनो, हमारे ज्वर आदि शारीरिक रोगों को और अविद्या आदि मानसिक रोगों को विनष्ट करो, क्योंकि रुग्ण शरीर और रुग्ण मन से हम किसी भी क्षेत्र में उन्नति नहीं कर सकते। तुम ‘वसुवित्’ बनो, हमें आत्मिक ऐश्वर्य प्राप्त कराओ, क्योंकि आत्मिक ऐश्वर्य ही सच्चा धन है, उसके बिना भौतिक ऐश्वर्य अकिञ्चित्कर है। तुम ‘पुष्टि—वर्धन’, होवो, हमारी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक पुष्टियों को अधिकाधिक बढ़ाते चलो, क्योंकि यदि पूर्व—प्राप्त पुष्टि बढ़ेगी नहीं तो संचित पूंजी शीघ्र ही चुक जाएगी और हम कंगाल हो जाएंगे।

एक सच्चे मित्र के करने योग्य ये ही कर्तव्य हैं। हे प्रभु! यदि इन्हें तुम हमारे लिए करोगे तो सचमुच हमारे अन्तरंग सखा हो जाओगे और तुम सुमित्र को पाकर हम स्वयं को धन्य मानेंगे।

आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकार
की पुस्तक वेद—मंजरी से साभार

वेदविहित नहीं है यज्ञ में पशुबलि

-डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

महर्षि दयानन्दकृत वेदार्थ से एक लाभ यह भी हुआ कि जहां कतिपय वेदज्ञत्वाभिमानी लोग वेद मन्त्रों को भ्रष्ट अर्थ करके अवोध जनता में प्रान्ति फैला रहे थे, वहाँ का यह दुष्प्रयत्न रुक गया और वेद प्रेमीजन मन्त्रों को यथार्थ जानने में समर्थ होने लगे। उदाहरण के लिए द्रष्टव्य है वैदिक वाङ्मय में बहुलता से प्रयुक्त यज्ञ शब्द और उससे जुड़े हुए नरमेध होने, अश्वमेध तथा गवालम्बन, अश्वालम्बन, इत्यादि शब्द लिखे गए हैं। मध्यकालीन वेद भाष्यकारों ने यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कर्म में पशुहिंसा का विधान कर दिया। तब गोमेध, गवालम्बन, आदि शब्दों का गाय आदि पशुओं को यज्ञ में बध और उनके माँसादि का अग्नि में होम करने का कुत्सित प्रचलित कर दिया। जब यूरोप के मैक्समूलर विल्सन आदि वेदानुवादकों की दृष्टि सायण, महीधरादि वेदभाष्यकारों के द्वारा किये गये इन ग्रंथों पर पड़ी तो उन सबने एक स्वर से मानो यज्ञ का एकमात्र अंग्रेजी भाषा में सैक्रिफाइस अर्थ प्रचलित कर दिया, जिसका अभिप्राय भारद्वाज डिक्शनरी में लिखा गया है— किसी देवता के लिये भेंट स्वरूप किसी पशु को मारना अंग्रेजी में आज तक यही अर्थ यज्ञ का लिया जाता रहा है परन्तु गम्भीरता से पूर्वापर प्रकरण और मूल वेद संहिताओं को विचारने पर ज्ञात होता है कि उक्त यज्ञादि शब्द मूलतः अत्युत्तम अर्थों का वाचक है। मध्यकालीन धूर्त लोगों के द्वारा निन्दित अर्थों में इन शब्दों का प्रयोग अज्ञानता से अथवा किन्हीं स्वार्थों के वशीभूत होकर कर दिया गया।

वेदों में यज्ञ या पूजा के लिए किसी प्राणी को मारने का विधान नहीं है। हम वैदिक साहित्य के आधार पर इस विषय में कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं—

शतपथ ब्राह्मण की एक श्रुति इस प्रकार है—

पुरुष हवै देवा अग्रे पशुमालेभिरे। तस्यालब्धस्य

मेधोऽपचक्राम सोऽश्वं प्रविवेश तेऽश्वमालभन्तं तस्यालब्धस्य मेधो पचक्राम स गां प्रविवेश ते गामालभन्त तस्यालब्धस्य मेधोऽपचक्राम स इमां पृथिवीं प्रविवेश तं खनन्त इवानीषुस्तमन्वविन्दंस्तावि मौ व्रीहियवौ। (श० ब्रा० १-२-३-६)

इसका भाव बलिदान की भावना वालों ने यही लिया है कि पहले मनुष्य का बलिदान यज्ञ में किया जाता था, फिर घोड़ों का बलिदान होने लगा। इसके पश्चात् गाय का नम्बर आया, फिर भेड़ का प्रयोग हुआ, तदन्तर बकरी की बलि चली, पुनः अन्न का प्रयोग होने लगा। बलिदान पक्ष वालों ने मेध्य यज्ञ में चढ़ाने योग्य और आलम्बन का अर्थ मारडालना रूढ करके अपनी धारणाओं को पुष्ट कर डाला। मेधा शब्द का अर्थ बुद्धि है। आलम्बन का अर्थ प्राप्त करना, छूना भी है। मेध्य के बुद्धि युक्त, पवित्र आदि अनेक अर्थ हैं फिर बलात् शब्दों को रूढ कर डालना उचित नहीं है। वैदिक वाङ्मय में आलम्बन का अर्थ स्पर्श और मेध्य का अर्थ शुद्ध है।

पशु समाज को लाभ पहुंचाता हुआ यज्ञोपयोगी बन गया। अग्नि में सामग्री डालना भर ही यज्ञ नहीं कहलाता। जो कुछ संगतिकरण, सहकारिता, परस्पर कल्याणकारिणी सहायता है, सब ही यज्ञ हैं। यह सृष्टि भी देवताओं का यज्ञ है पुरुषो वै यज्ञः।

या वै प्रज्ञा यज्ञेऽनन्वभक्ताः। पराभूताः वै ता एवमेवैतद्या इमाः प्रज्ञा अपराभूतास्ता यज्ञेऽआभजति मनुष्याननु पशवो देवाननु वयांस्योषधयो वनस्तयो यदिदं किञ्चौवमु तत्सर्वं यज्ञेऽआभक्तम्।। (शतपथ १-५-२-४)



इस पाठ से स्पष्ट है कि मनुष्य, देव, पशु, पक्षी, वृक्ष, वल्लरी, सब यज्ञ के लिए हैं। तो क्या सब को मार डालना चाहिए? वस्तुतः जो सृष्टि के पदार्थों को यज्ञार्थ समझ लेता है, वही इनका यथातथ्य उपयोग कर सकता है। इन सबकी संगति लगाना ही ठीक यज्ञ है। यजुर्वेद अध्याय १८ में सब ही वस्तुओं को यज्ञ में कल्पित किया गया है। परन्तु उन सब वस्तुओं को यज्ञ में जलाना यज्ञ नहीं है। जिस वस्तु से जो काम लेना चाहिए वही काम लेना उन वस्तुओं का यज्ञ में उपयोग है।

यज्ञ में हवन करने को जो पुरोडाश तैयार होता है, उसमें मांस का नाम नहीं है—

अथ यत्पुरोडाशः । धानाः करम्भो दध्यामिक्षेति भवति या यज्ञस्य देवतास्ताः सुप्रीता असन्निति । इदं वाऽअपूपमशिवा कामयते । धानाः खादेयं करम्भमशनीयां दध्यशनीयामामिक्षामशनीयामिति । ते सर्वे कामा या यज्ञस्य देवतास्ताः सुप्रीता असन्निति । (शतपथ ४-२-५-१८ १६)

यहाँ पुये, भात, दही प्रादि पदार्थों का उपयोग बताया गया है, आमिष का नहीं। पशुओं को केवल दही, दूध, खेती के लिए ही प्रोक्षित करने का भाव शास्त्र का था, पर अज्ञानी याज्ञिकों ने पशुओं को मारना प्रारम्भ कर दिया। "वशा" से तात्पर्य बन्ध्या गौ का नहीं, 'वपा' चर्बी नहीं। पुराने धान और उनके चावलों से प्रयोजन है।

अथर्ववेद का एक मन्त्र इस प्रकार है:—

मुग्धा देवा उत शुनाऽयजन्तोत् गोरङ्गैः पुरुधाऽयजन्त ।

य इमं यज्ञं मनसा चिकेत प्र णो वोचस्तमिहेह ब्रवः ॥

(अथर्ववेदः ७-५-५)

इस मन्त्र का पूर्वाद्ध कुत्ते और गाय के अंगों से, मुग्ध देवों के बहुधा यज्ञ करने का वर्णन करता है—ऐसा भाष्यकार सायणाचार्य तथा आँग्लभाषानुवादक ग्रिफिथ का मत है। परन्तु प्रकृत मन्त्र का देवता आत्मा है। अतः यह आत्मविषयक किसी रहस्य का द्योतक होना चाहिए। पशुहिंसा द्वारा देवपूजन की बात करना

यहां नितान्त अन्याय है अतः मन्त्र का वास्तविक अर्थ चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार के भाष्य में देखा जा सकता है, जो कि इस प्रकार है रू—(मुग्धाः) परमात्मा से मुग्ध हुए (देवा) दिव्य पुरुष (इमम्) इस (यज्ञम्) यज्ञमय परम पुरुष की (शुना) गतिशील प्राण द्वारा (गोः मर्गः) और गो, वाणी या योगादि उपायों या वेदमन्त्रों द्वारा (पुरुषा) नाना प्रकारों से (अजयन्त) उपासना करते हैं, (यः) जो दिव्य पुरुष (मम् यज्ञम्) इस परम पूजनीय प्रभु को (मनसा) अपने गनन सावन, ग्राम्यन्तर साधन द्वारा (विकेत) जान लेता है, वह (नः) हमें (प्रबोधः) उस उत्कृष्ट परम पुरुष का उपदेश और वही विद्वान् (तम) उस परम पुरुष के विषय में (शह—इह) प्रत्येक मनुष्य में (ब्रवः) उसका उपदेश करें। सायण और सायण के पीछे चलने वालों के मत में— देवताओं ने मूढ होकर रखे गाय के टुकड़ों से यज्ञ किया इत्यादि अर्थ किया है, सो असंगत है। क्योंकि इस प्रकरण में यज्ञ की उनके लिए मन को मुख्य साधन बनाया है। जब इस सूक्त का देवता आत्मा है तो इसकी साधना में कुत्ते और गाय के मांस आदि का प्रयोग मानना मूर्खता है।

कौशिकसूत्र और तदनुसारी मन्त्रार्थ करने वाले सायणाचार्य के भाष्य से एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यज्ञ में पशुबलि और पशुमांस होम की विधि को सर्वथा अवैदिक और वाममार्ग द्वारा प्रेरित दर्शाते हुए पं० जयदेव शर्मा जी लिखते हैं—

प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो गातुं धत्त यजमानाय देवाः ।

उपाकृतं शशमानं यदस्थत्प्रियम्देवानामप्येतु पाथः ॥

(अथर्ववेद २-३४-२)

सायण अर्थ करते हैं, कि हे (देवाः) मारे जाने वाले पशु के चक्षु, आदि प्राणो, तुम लोग (भुवनस्य रेतः) समस्त प्राणियों द्वारा या उत्पात के कारणरूप पुण्य लोकों को जाने का मार्ग (धत्त) बनाओ। (उपाकृतम्) उपकरण संस्कार से युक्त (शशमानम्) मारे जाते हुए और (यत् देवानी प्रियं पाथः) जो देवों

के प्रिय अन्न अर्थात् मांस (अस्थात्) है, उसको यह पशु (अप्येतु) प्राप्त हो । इस अर्थ में सायण ने मरते तड़पते पशु के प्राणों से यजमान के लिए स्वर्ग के मार्ग बनाने की आशा की है और पशुमांस को देवों का प्रिय बतलाया है । मांस आदि पिशाचों और राक्षसों का भोजन है, देवों का नहीं है । सायण ने यह वाममार्गपरक अर्थ किया है ।

नाना प्रकार के अग्निहोत्रादि यज्ञ अध्यात्म विज्ञान और अधिदेवत-विज्ञान को प्रकट करते हैं । इस तथ्य को न जानने वाले यज्ञों के रहस्य और मर्म को नहीं जानते और यज्ञ की शब्दावली का कभी कभी अत्यन्त हास्यापद अर्थ कर डालते हैं । अब पशुबलि और भूतबलि शब्दों के अर्थ पर विचार करते हैं—

पाणिनीय व्याकरण अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय के प्रथम पाद में ३६वाँ सूत्र इस प्रकार है—चतुर्थी तदर्थावति हितसुखरक्षितैः । इसका अर्थ है कि चतुर्थ्यन्त समर्थ पद का तदर्थ, अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित शब्दों के साथ तत्पुरुष समास होता है । सो इस नियम के अनुसार पशुभ्यो बलिः पशुबलिः भूतेभ्यो वलिः=भूतबलिः यह सामासिक विग्रह हुआ । इसका अर्थ है—पशुओं को दिया जाने वाला खाद्य पदार्थ (वलि) पशुबलि, और भूतों अर्थात् प्राणियों को दिया जाने वाला खाद्य पदार्थ (बलि) भूतबलि कहा जाता है । अष्टाध्यायी के प्राचीन वृत्तिकार जयादित्य ने इस सूत्र में बलिशब्द के साथ समास के ये दो उदाहरण दिये हैं—कुबेराय बलिः=कुबेरबलिः । महाराजाय बलिः=महाराजबालः । इसका अभिप्राय हुआ कुबेर को दिया जाने वाला भोग या कर, कुबेरबलि नाम से तथा महाराज को दिया जाने वाला भोग या कर महाराजबलि नाम से जाना जाता है । लोक में प्रसिद्ध काकबलि शब्द को ही लीजिए, जिसका अर्थ कौवे को दिये जाने वाली रोटी, आदि अन्न ग्रास है, न कि कौवे को मारना तब पशुबलि या भूतबलि शब्दों से पशुओं को या प्राणियों को मारना यह अर्थ कैसे संगत हो सकता है ? इसका निर्णय

हम निष्पक्ष बुद्धिमान लोगों के ऊपर ही छोड़ते हैं ।

यहाँ यदि कोई यह कहे कि भले ही व्याकरणानुसार पशुबलि का अर्थ पशु का बध करना नहीं होता, किन्तु लोक में तो आजकल यह शब्द किसी देवता के नाम पर पशु को काट कर उसे अर्पित करने के अर्थ में रूढ हो गया है । अतः इस अनुचित रूढिवाद को समूल नष्ट करने के लिए आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सारे देश में महान् आन्दोलन चलाया था और इन रूढ़ियों से निरन्तर संघर्ष करते रहकर इन्हें समाप्त करने के लिए अपनी उत्तराधिकारिणी संस्था आर्यसमाज को प्रेरित किया था । दूसरे—यदि पशु का बलि पशुबलि ऐसा सामाजिक विग्रह और अर्थ किया भी जाय तो बलि का अर्थ उपहार या राजकर होने से समूचे जीवित पशु को किसी को प्रदान करना रूप अर्थ पशु बलि शब्द से लिया जाना चाहिए, किन्तु पशु को मारना अर्थ तब भी नहीं बनता । तीसरे—यदि किसी देवता विशेष के लिए पशु को मारकर उसके अंगों को उसे अर्पित करने की बात ही पशुबलि शब्द से अभिप्रेत है, तो प्रश्न होता है कि वह देवता, जिसके लिए पशु को मारा गया है, उस पशु को क्यों नहीं खाता है? अथवा मारने काटने के अनन्तर वह पशु अदृश्य क्यों नहीं हो जाता है? परन्तु ऐसा होता नहीं है । देखा यह जाता है कि पशु को तथाकथित देवी या देवता के नाम पर मन्दिर आदि स्थानों में बध करने के बाद, स्वयमेव उसे मारने वाले या ऐसे कृत्य द्वारा पूजा करने वाले खा जाते हैं । तब किसी देवता के लिए पशु की भेंट न होकर मारने वाले के लिए ही वह हो जाती है । इससे यह सिद्ध है कि न तो शास्त्र-प्रमाण से और न किसी युक्ति से ही पशुबलि या भूतबलि शब्दों का अर्थ पशु, आदि प्राणियों का हनन और किसी तथाकथित देवता के लिए अर्पण किया जाना उचित माना जा सकता है । वस्तुतः यह एक असभ्यतापूर्ण, मूर्खतापूर्ण और धूर्ततापूर्ण प्रथा बहुत लम्बे समय से देश-विदेश के

समाज में चली आ रही है, जिसको दूर करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

वैदिक संहिताओं में बलि शब्द का व्यस्त और समस्त पद के रूपों में प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है। उदाहरण के लिए ऋग्वेद में छः स्थानों पर और अथर्ववेद में दो स्थानों पर यह शब्द प्रयुक्त है। किन्तु इन आठ स्थानों में कहीं पर भी बलि-शब्द का अर्थ हिंसापरक या हिंसित किये जाने वाले पशु आदि जीवपरक नहीं है। इसके विपरीत प्रायः सर्वत्र ही कर, उपहार, उपायन, भेंट या भोजन-सामग्री-इन अर्थों में भाष्यकारों ने बलि शब्द की व्याख्या की है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं:-

(१) गोषु प्रशस्तिं बनेषु धिषे भरन्त विश्वे बलिं स्वर्णः ।
(ऋग्वेद १-७०-५)

इस मन्त्र में बलिम् पद का अर्थ स्कन्दस्वामी और सायणाचार्य ने उपायत रूपं धनम् किया है। स्वामी दयानन्द ने संवरण अर्थ किया है।

(२) तुभ्य भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलमग्ने अन्तित ओत दूसात् ।
(ऋग्वेद ५-१-१०)

इस मन्त्र में बलि पद का अर्थ सायण और वैकटमाधव ने क्रमशः हविलक्षण पूजा और हविः किया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भक्ष्य-भोज्यादिपदार्थसमूह अर्थ किया है।

(३) स निरुध्या नहुषो यद्वा अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः ।

(ऋग्वेद ७-६-५)

इस मन्त्र में बलिहृतः, विश पदों का अर्थ सायणाचार्य, वैकटमाधव तथा स्वामी दयानन्द ने कर-प्रदान करने वाले लोग किया है।

इस प्रकार बलिशब्द के अर्थ पर विस्तृत विवेचना के फलस्वरूप हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मूलतः यह शब्द सुन्दर है और उपहार भेंट की वस्तु, पूजा में प्रति वस्तु कर (टैक्स), आदि अच्छे अर्थों का वाचक है। मनुष्य या पशु, यदि

किसी जीव को मार कर उसे किसी के लिए देना-इस घृणित और तुच्छ अर्थ में शब्द का प्रयोग मध्यकालिक मांसाहारप्रिय वाममार्गियों की देन है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की निम्नांकित बातें हमारा दिशा-निर्देश कर सकती हैं-

वेदों में जो यज्ञादिक करने की आज्ञा है, उस सबको प्रमाण और युक्तिसिद्ध होने को मैं मानता हूँ और सबको अवश्य मानना चाहिए।

मध्यकाल में मनुष्यों में मांस भक्षण की प्रवृत्ति बढ़ जाने से सात्विक द्रव्य-यज्ञों में भी पशु हिंसा की बात चल पड़ी। इसके लिये अनेक उपाय किये गये। वेदेतर साहित्य में यत्र-तत्र प्रक्षेप द्वारा पशुहिंसा परक विधान कर लिए गये। मनुस्मृति जैसे महत्वपूर्ण और प्रामाणिक धर्मशास्त्र को भी नहीं छोड़ा गया और उसके अध्याय ५ के श्लोक ३१, ३६, ४४, इस बात के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जहाँ कहा गया है कि यज्ञ में किया जाने वाला पशुबध नहीं है।

मनुस्मृति का श्लोक संख्या- ३६ इस प्रकार है-

यज्ञायं पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ।

यज्ञश्च भूत्यं सर्वस्य तस्माद्यज्ञे वधाऽवधः ॥३६॥

(स्वयम्भुवा) ब्रह्मा ने (स्वयम्) स्वयं (पशवः) पशुओं को (यज्ञार्थम् एव सृष्टाः) यज्ञ के लिए ही बनाया (च) और (यज्ञः) यज्ञ (सर्वस्य भूत्यं) सब के कल्याण के लिए है (तस्मात्) इस कारण से (यज्ञे वधः अवधः) यज्ञ में पशु आदि प्राणियों की हिंसा करना अहिंसा ही है ॥

तस्माद् यज्ञे वधाऽवधः। इसी आधार पर पीछे यह कहावत चल पड़ी- वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति। समस्त मानवजाति, विशेषतः आर्यों का यह कर्तव्य है कि यज्ञ के शुद्ध स्वरूप को समझें और पशुबलि और पशुहिंसा के विरुद्ध समाज को जाग्रत करने का पुनीत कार्य करें।

सत्य और अहिंसा का सिद्धान्त वेदों की देन

-मनमोहन कुमार आर्य

आजकल सत्य और अहिंसा की बात बहुत की जाती है। वस्तुतः सत्य और अहिंसा क्या है और इनका उद्गम स्थल कहां हैं? इसका उत्तर है कि इन शब्दों का उद्गम स्थल वेद और समस्त वैदिक साहित्य है। वेद वह ग्रन्थ हैं जो सृष्टि की आदि में ईश्वर से मनुष्यों को प्राप्त हुए थे। वेद का अर्थ ज्ञान होता है। सत्य का अर्थ सत्तावान होता है। इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि जिस पदार्थ की सत्ता है, उसके गुण, कर्म व स्वभाव अवश्य होते हैं, उनका यथार्थ वा ठीक ठीक ज्ञान सत्य कहलाता है। ईश्वर की सत्ता है तथा जीवात्मा और प्रकृति की भी सत्ता है। अतः यह तीनों पदार्थ सत्य कहे व माने जाते हैं। इसी प्रकार ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के जो गुण, कर्म व स्वभाव हैं, उनका यथार्थ ज्ञान सत्य कहा जाता है। सत्य के बाद अहिंसा क्या है, इस पर विचार करते हैं। अहिंसा का अर्थ होता है अ-हिंसा अर्थात् हिंसा न करना। इसका भाव है कि दूसरों के प्रति वैर भावना का त्याग करना। हम दूसरों के प्रति हिंसा तभी करते हैं जब हमारा दूसरों के प्रति वैर भाव होता है या फिर हमारा निजी स्वार्थ होता है। हिंसा क्यों नहीं करनी चाहिये? इसका उत्तर है कि हम नहीं चाहते कि दूसरे लोग व प्राणी हमारे प्रति हिंसा करें। हिंसा जिसके प्रति की जाती है उसको हिंसा से दुःख व पीड़ा होती है। यदि हम चाहते हैं कि कोई हमारे प्रति हिंसा का व्यवहार न करे तो हमें भी दूसरों के प्रति हिंसा का त्याग करना होगा। इसके लिए हमें दूसरों के प्रति अपने मन व हृदय में प्रेम व स्नेह का भाव उत्पन्न करना होगा तभी हिंसा दूर हो सकती है। इससे हमारे मन व हृदय में शान्ति उत्पन्न होगी जिससे हमारा मन व मस्तिष्क ही नहीं अपितु शरीर भी स्वस्थ एवं दीर्घायु को प्राप्त होगा। अतः हर उस व्यक्ति को दूसरे प्राणियों के प्रति अहिंसा का व्यवहार करना चाहिये जो दूसरों के द्वारा अपने प्रति हिंसा का व्यवहार करना पसन्द नहीं करता है।

वेदों के आधार पर वेदज्ञ ऋषि दयानन्द ने एक नियम बनाया है जिसमें कहा गया है 'सत्य के

ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।' एक नियम यह भी है कि मनुष्य को अपना हर काम सत्य व असत्य का विचार करके करना चाहिये। सत्य का ग्रहण और उसका पालन ही सभी मनुष्यों का धर्म होता है। जो मनुष्य सत्य को नहीं जानता और सत्य का पालन व आचरण नहीं करता, वह धार्मिक नहीं होता। धार्मिक तभी होता है कि जब वह असत्य व अज्ञान अर्थात् अविद्या का त्याग करे। जिस प्रकार अपने गन्तव्य पर पहुंचने के लिए हमें उस गन्तव्य की ओर जाने वाले मार्ग व साधनों का ज्ञान होना आवश्यक है, उसी प्रकार से मनुष्य जीवन को सफल करने के लिए भी सत्य का ज्ञान व उसका पालन आवश्यक होता है। कहा भी जाता है 'सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप।।' अर्थात् सत्य से बढ़कर तप व धर्म नहीं है और झूठ से बढ़कर पाप नहीं है। इसके हृदय में सत्य विद्यमान है उसके हृदय में जानों ईश्वर विराजमान है। वेद सब सत्य विद्या के ग्रन्थ हैं। संसार में ऐसा कोई मत व पन्थ नहीं है जो यह सिद्ध करे कि उसके मत व धर्म के ग्रन्थ पूर्णतया सत्य पर आधारित हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने विश्व प्रसिद्ध व संसार की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' में सभी मतों की असत्य मान्यताओं को प्रस्तुत कर ज्ञान व विद्या के आधार पर उनकी समालोचना की है और सभी मतों में विद्यमान असत्य मान्यताओं को तर्क व प्रमाणों से सिद्ध किया है। अतः वेद, वेदानुकूल दर्शन, कुछ उपनिषद व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ ही अविद्या व अज्ञान से रहित एवं सत्य विद्याओं के ग्रन्थ सिद्ध होते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वैदिक साहित्य के इन ग्रन्थों से ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति सहित मनुष्य के कर्तव्यों व मनुष्य जीवन के उद्देश्य वा लक्ष्य का यथार्थ बोध होता



है।

दूसरों को पीड़ा देना अधर्म कहलाता है। कोई भी विवेकी मनुष्य व विद्वान इस कृत्य को उचित नहीं कह सकता। अतः मनुष्य हो या पशु-पक्षी, किसी को भी पीड़ा देना अधर्म व महापाप होता है। दूसरों को पीड़ा देना उनके प्रति हिंसा ही कही जाती है। इसका उपाय यह है कि हम स्वयं को अहिंसक स्वभाव व भावना वाला बनाये। ऐसा करने पर हम वस्तुतः मनुष्य बनते हैं। वेद मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा व आज्ञा देते हैं। 'मनुर्भव' इस एक शब्द में ईश्वर ने वेद के द्वारा मनुष्य को मनुष्य बनने अर्थात् मननशील होकर सत्य का ज्ञान प्राप्त करने व उसका आचरण करने की प्रेरणा की है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि हमें सबसे यथायोग्य व्यवहार करना चाहिये। यथायोग्य का अर्थ होता है जैसे को तैसा। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हम असत्य व हिंसक आचरण करने वाले मनुष्य का सुधार नहीं कर सकते। हमारे विरोध न करने से उसकी हिंसा की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा। इसका दोष हम पर ही होगा। मनुष्य को सुधारने के चार तरीके होते हैं साम, दाम, दण्ड और भेद। जो व्यक्ति सज्जन है उसे प्रेम से समझाया जा सकता है। यदि वह नहीं सुधरता तो कुछ दमन करना होता है। उस पर भी यदि वह न सुधरे और यदि वह हिंसा का आचरण करे तो फिर उसको दण्ड वा अल्प हिंसा से युक्त दण्ड देकर ही सुधारा जा सकता है। अहिंसा का यह अर्थ कदापि नहीं होता कि कोई हमारे प्रति हिंसा का व्यवहार करे और हम मौन होकर उसे सहन करें। यदि ऐसा करेंगे तो हिंसक मनुष्य का स्वभाव

और अधिक हिंसा वाला होगा और वह अन्य सज्जन लोगों को भी दुःख देगा। वेद हिंसक मनुष्य या प्राणियों के प्रति यथायोग्य व्यवहार की ही प्रेरणा देते हैं। गीता में कृष्ण जी ने भी कहा है कि 'विनाशाय च दुष्टकृताम्' दुष्टता करने वाले मनुष्य की दुष्टता को कुचल दो। ऐसा करके ही अहिंसा का पालन व सत्य की रक्षा अनेक अवसरों पर होती है। अतः मनुष्यों को अहिंसा का प्रयोग करते हुए विवेक से कार्य लेना चाहिये। यह भी कहा जाता है कि अहिंसा कायर लोगों का आभूषण होता है। कुछ सीमा तक यह बाद है भी ठीक। हमें एक सीमा तक ही लोगों का बुरा व्यवहार सहन करना चाहिये और यदि वह न सुधरे तो फिर उसका समुचित निराकरण यथायोग्य व उससे भी कठोर व्यवहार करके करना चाहिये।

योगदर्शन की भी कुछ चर्चा कर लेते हैं। योगदर्शन वेदों का एक उपांग है। अष्टांग योग में योग का पहला अंग यम है। यम पांच होते हैं जो कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह हैं। महाभारत से भी पूर्व व भारत में बौद्ध व जैन मत की स्थापना से भी हजारों व लाखों वर्ष पूर्व से हमारे योगी, ऋषि-मुनि व वैदिक धर्मी लोग अहिंसा व सत्य सहित पांचों यमों का पालन करते आये हैं। यह यम किसी एक मत के लिए नहीं अपितु यह सार्वजनीन हैं अर्थात् विश्व के सभी मनुष्यों के पालन व आचरण करने योग्य हैं। सभी को इसे जानकर इसकी मूल भावना के अनुसार सेवन व आचरण करना चाहिये। इसी से मनुष्य जीवन शोभायमान होता है।

आर्य समाज आवासीय भवन, चकराता का पुनर्निर्माण

आदरणीय बन्धुओं, आपको जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज चकराता की स्थापना वर्ष 1920 में हुई थी। आर्य समाज भवन का पुनर्निर्माण आप सभी आर्यों के सहयोग से लगभग 5 वर्ष पूर्व पूर्ण किया जा चुका है लेकिन आवासीय भवन जर-जर स्थिति में है जिसका पुनर्निर्माण अतिशीघ्र करने की आवश्यकता है। भवन के पुनर्निर्माण के पश्चात् आप अपने परिवारजनों के साथ इस अति सुन्दर हिलस्टेशन पर सुखद समय व्यतीत कर सकेंगे। यह सुनिश्चित किया जायेगा कि इस स्थान पर शाकाहारी, शुद्ध भोजन की व्यवस्था भी रहे क्योंकि चकराता में शाकाहारी भोजन मिलने में बहुत कठिनाई होती है। इसके अलावा होटल भी बहुत महंगे हैं और टूरिस्ट सीजन में होटलों में जगह नहीं मिलती। इस पुनीत कार्य हेतु आप श्री तीरथ कुकरेजा, प्रधान, आर्य समाज चकराता को आर्य समाज मन्दिर चकराता के नाम से बैंक/ड्राफ्ट द्वारा धनराशि दे सकते हैं अथवा डिस्ट्रिक्ट कोओपरेटिव बैंक, देहरादून खाता सं. 001334001001788, IFS Code: YESB0DZSB06 में जमा करके दूरभाष सं. 8755525556 पर सूचित कर सकते हैं ताकि आपको धन प्राप्ति की रसीद भेजी जा सके। आप भवन निर्माण हेतु सीमेन्ट, सरिया, रोड़ी, बजरी आदि देकर भी मदद कर सकते हैं। धन्यवाद।

अच्छाई को फौरन अमल में लाना ही फायदेमंद

—सीताराम गुप्ता, दिल्ली

जब भी हम फल—सब्जियाँ खरीदने के लिए बाज़ार जाते हैं तो कई बार वहाँ बहुत अच्छी किस्म के फल दिखलाई पड़ जाते हैं। ऐसे अच्छे कि उन्हें देखकर मुँह में पानी भर आता है और हम फौरन वे फल खरीदकर ले आते हैं। घर पर आकर पता लगता है कि घर पर पहले ही कुछ फल रखे हुए हैं और अगर उन्हें आज ही इस्तेमाल नहीं किया गया तो वे कल तक खराब हो जाएँगे। हम ताज़ा लाए हुए फलों को रख देते हैं और घर पर पहले से रखे पुराने फल इस्तेमाल कर लेते हैं। लेकिन ताज़ा फलों को देखकर जो उत्साह मन में भर गया था वो ठंडा पड़ गया क्योंकि पहले से रखे हुए पुराने फल कुछ बासी हो जाने के कारण उतने स्वादिष्ट नहीं लगे।

अगले दिन जब पिछले दिन खरीदे हुए आकर्षक व रसीले फलों के सेवन करने की बारी आई तो भी मज़ा नहीं आया कारण फल कुछ ज़्यादा ही पक चुके थे। ज़्यादा पक ही नहीं चुके थे कुछ ढीले और दागी भी हो गए थे। उनका स्वाद भी थोड़ा बदल चुका था। प्रायः ऐसा ही होता रहता है जीवन में। हम प्रायः पुरानी चीज़ों अथवा खाद्य पदार्थों को बचाने के लोभ अथवा चक्कर में नई चीज़ों को भी पुराना करके इस्तेमाल करने को अभिशप्त होते हैं। इससे बचने का क्या उपाय हो सकता है? इसका यही उपाय हो सकता है कि हम पुरानी चीज़ें समाप्त हो जाने के बाद ही नई चीज़ें खरीदें और जहाँ तक हो सके पहले केवल अच्छी चीज़ों का ही इस्तेमाल करें अन्यथा ये दुष्चक्र कभी नहीं टूटेगा और अच्छी चीज़ें उपलब्ध होने के बावजूद हमें हमेशा खराब चीज़ें इस्तेमाल करनी पड़ेंगी।

प्रायः यही स्थिति हमारी आदतों अथवा व्यवहार के विषय में होती है। हम बहुत कुछ नया और अच्छा सीखते रहते हैं लेकिन जब उसको जीवन में

प्रयुक्त अथवा क्रियान्वयन करने का अवसर आता है तो हम प्रायः नई सीखी हुई अच्छी बातों की उपेक्षा करके पुरानी बातों को ही अपने व्यवहार में लाते रहते हैं। ये स्वाभाविक भी है क्योंकि पुरानी आदतें मुश्किल से छूटती हैं। ऐसा करने के हमारे पास तर्क भी कम नहीं होते। मान लीजिए कि हमने अभी हाल ही में सीखा है कि हमें हर परिस्थिति में केवल सच बोलना है। जब सचमुच सच बोलने का अवसर आता है तो हम ये सोचकर या कहकर सच बोलने अथवा पूरा सच बोलने से पीछे हट जाते हैं कि लोग इतने अच्छे नहीं हैं कि उनके सामने सच बोला जाए या आज सच बोलने का समय नहीं रहा या सच बोलने वाले को लोग मूर्ख समझते हैं और उसे ही सबसे ज़्यादा धोखा देते हैं।

प्रायः हम कहते अथवा सोचते हैं कि जब हमारा अच्छे लोगों से वास्ता पड़ेगा तभी हम अच्छा व्यवहार करेंगे अथवा अच्छी आदतों को व्यवहार में लाएँगे। हरेक व्यक्ति के सामने अच्छाई का प्रदर्शन करने का क्या फायदा? वास्तव में हम जो करते हैं वो दूसरों के लिए नहीं अपितु वह स्वयं हमारे लिए ही होता है। अपनी आदतों अथवा व्यवहार द्वारा हम स्वयं अपने परिवेश व समाज का निर्माण करते हैं। यदि हम बेहतर समाज के निर्माण के लिए कार्य नहीं करेंगे तो हमें अपेक्षाकृत कम बेहतर अथवा बुरे समाज में रहने के लिए विवश होना पड़ेगा। हम



जितनी जल्दी अच्छे समाज का निर्माण करने में सफल होंगे उतनी ही जल्दी हमें उस समाज में रहने के लाभ मिलने लगेंगे और उसके लिए सबसे उपयुक्त समय आज का ही हो सकता है। संभव है भविष्य में हमें इसके लिए अवसर ही न मिले।

जिस प्रकार से हम अच्छी तरह से पके हुए ताज़ा फलों का सेवन करके अधिक स्वाद व ऊर्जा पा सकते हैं और बासी फलों के सेवन से उत्पन्न हानिकारक स्थितियों से बच सकते हैं उसी प्रकार से नई सीखी हुई अच्छी बातों को व्यवहार में लाकर हम न केवल पुरानी ग़लत आदतों से मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व को अधिकाधिक प्रभावशाली व आकर्षक बना सकते हैं अपितु संपर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों का स्नेह व सहयोग भी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब हम पके हुए ताज़ा व अच्छे फलों को बासी अथवा खराब होने से पूर्व सेवन करने की तरह ही जो भी अच्छी बातें हम सीखें उन्हें उसी समय से अपने व्यवहार में लाना प्रारंभ कर दें और जो आदतें अच्छी नहीं हैं उन्हें भूलकर भी प्रयोग न करने का संकल्प लें।

अच्छी चीज़ों की एक विशेषता ये होती है कि खराब चीज़ों के साथ मिलकर वे भी खराब हो जाती हैं। यदि हम ताज़ा फलों अथवा सब्ज़ियों को बासी अथवा खराब फलों व सब्ज़ियों के साथ रख देंगे तो अच्छे फल अथवा सब्ज़ियाँ भी बहुत जल्दी खराब होने लगेंगी। अच्छी चीज़ें हों अथवा अच्छी आदतें उन्हें खराब चीज़ों अथवा ग़लत आदतों के साथ कभी नहीं मिलाना चाहिए या व्यवहार में लाना चाहिए अन्यथा उनके विकृत अथवा दूषित होने में भी देर नहीं लगेगी। जिस प्रकार से अच्छे फलों का समय पर सदुपयोग न होने पर वे खराब हो जाते हैं अथवा हम उन्हें रखकर ही भूल जाते हैं अच्छी बातों को भी शीघ्र व्यवहार में न लाने पर वे भी समयानुसार अनुकूल अथवा उपयोगी नहीं रहतीं अथवा विस्मृति के गर्भ में चली जाती हैं। यदि हम अपने अच्छे विचारों अथवा अच्छी आदतों को कार्यरूप में परिणत नहीं करेंगे तो कालांतर में वे नकारात्मक विचारों के कचरे में दबकर रह

जाएँगी जिससे उन्हें जानने व सीखने का कोई लाभ नहीं मिलेगा।

यदि हम हमेशा अच्छे फल खरीदकर लाते हैं तो उनको रोज़-रोज़ बासी करके खाने का क्या औचित्य हो सकता है? ये प्रबंधन की कमी कही जा सकती है। हमें इस आदत को बदलना ही होगा अन्यथा जीवन में कभी अच्छे फल नहीं खा पाएँगे। इसी प्रकार से नई बातों को सीखने का क्या लाभ यदि हम उन्हें अपने जीवन में लागू ही न कर पाएँ? नई बातें जानने व सीखने में हम बहुत रुचि लेते हैं और उसके लिए हर प्रकार का त्याग भी करते हैं। यदि सीखी हुई बातों से लाभान्वित नहीं होंगे तो इस त्याग व प्रयास का कोई महत्त्व ही नहीं रह जाएगा। जहाँ तक बुरी आदतों अथवा व्यवहार का त्याग करने की बात है इससे कभी भी व किसी भी स्तर पर किसी प्रकार की कोई हानि होने की संभावना नहीं होती। अशुभ के त्याग का अर्थ है शुभ के लिए स्थान निर्मित करना। इसलिए अशुभ के त्याग व शुभ के क्रियान्वयन में कभी देर नहीं करनी चाहिए।

एक ही समय पर हम बासी व ताज़ा फलों का इस्तेमाल करें ये भी कुछ व्यावहारिक सा नहीं लगता। इसी प्रकार से हम अच्छी व बुरी दोनों प्रकार की आदतों को व्यवहार में लाते रहें तो भी बात नहीं बनेगी। बुरी आदतों अथवा व्यवहार का ख़मियाज़ा तो हमें भुगतना ही पड़ेगा। यदि हम किसी आयोजन में जाते हैं तो अच्छे से अच्छे कपड़े पहनकर ही जाते हैं। यदि हमने बहुत महँगे व अच्छे कपड़े पहने हैं लेकिन एक या दो चीज़ें ठीक नहीं हैं तो शेष महँगे अच्छे कपड़े पहनने का भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा अतः हमारे सारे कपड़े ही नहीं जूते, टाई व अन्य सभी वस्तुएँ भी उन्हीं के अनुरूप होनी चाहिए। हमें समग्र रूप से सब कुछ ठीक से करना होगा। हमें अच्छा व्यवहार करना होगा और हर व्यक्ति से अच्छा व्यवहार करना होगा। हमें हर जगह व हर समय अच्छा प्रदर्शन करना होगा तभी बात बनेगी अन्यथा कुछ अच्छी बातें भी बेमानी होकर रह जाएँगी।

ऋषि दयानन्द ने आर्यभाषा हिन्दी को ऋषियों की भाषा होने का गौरव प्रदान किया

-मनमोहन कुमार आर्य

संसार में अनेक भाषायें व बोलियां हैं। इनकी संख्या लगभग एक हजार व उससे कुछ कम हो सकती है। संस्कृत संसार की सबसे प्राचीनतम भाषा है। संस्कृत का आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से वेद ज्ञान के प्रादुर्भाव के साथ हुआ था। संस्कृतेतर सभी भाषायें समय समय पर उत्पन्न होती रही जिसमें संस्कृत की मातृभाषा के समान भूमिका रही है। संस्कृत के शब्दों में विकृतियां व उच्चारण दोष सहित भौगोलिक कारणों से भाषा में परिवर्तन होकर नई भाषायें व बोलियों का आविर्भाव होता है। सृष्टि की आदि भाषा संस्कृत रही है यह इस बात से स्पष्ट है कि ईश्वरीय ज्ञान वेद की भाषा संस्कृत ही है। इस आधार पर हम यह भी कह सकते हैं कि ईश्वर की अपनी भाषा भी संस्कृत ही है जो कि वेदों में दी हुई है। तुलनात्मक दृष्टि से भी वैदिक संस्कृत भाषा ही संसार की सर्वश्रेष्ठ भाषा है। संस्कृत के शब्दों से ओत-प्रोत व संस्कृत के शब्दों का सबसे अधिक जिस भाषा में शुद्ध व किंचित पाठ व उच्चारण भेद से प्रयोग किया जाता है वह भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी संसार की सबसे सरल व सुबोध भाषा है। चैकोस्लोवाकियां के भारत में एक राजदूत महोदय ने वर्षों पूर्व कहा था कि हिन्दी संसार की सरलतम भाषा है जिसे कुछ ही घंटों में सीखा जा सकता है।

सृष्टि के आरम्भ से भारत में सभी ऋषियों की भाषा संस्कृत रही है। सभी वैदिक वांग्मय संस्कृत में लिखा गया और ऋषि दयानन्द के आविर्भाव तक केवल संस्कृत भाषाविद ही वेद एवं वैदिक साहित्य दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, रामायण एवं महाभारत आदि से लाभ उठा सकते थे। ऋषि दयानन्द (1825-1883) के आविर्भाव के समय संस्कृत केवल कुछ विद्वानों की भाषा बन जाने व अति सीमित हो जाने के कारण इसके

हिन्दी दिवस

वैदिक साहित्य की पहुंच साधारण मनुष्यों तक नहीं थी। इस बात को ऋषि दयानन्द ने समझा था और इसी कारण जन-जन तक वेद एवं वैदिक सिद्धान्तों को पहुंचाने के लिये उन्होंने अपने उपदेश एवं ग्रन्थों को, संस्कृत के एक उच्च कोटि के वक्ता, विद्वान, लेखक व उपदेशक होने पर भी, हिन्दी में प्रस्तुत कर उन्होंने पहली बार वेद, मनुस्मृति एवं योगसूत्रों को हिन्दी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया था। ऋषि दयानन्द यदि ऐसा न करते तो आज संसार में वेदों की जो प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता है वह कदापि न होती। वेद, वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा में भी ऋषि दयानन्द के वेदों के प्रचार वा उपदेशों सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभि-विनय, गोकरुणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु आदि ग्रन्थों का महत्वपूर्ण योगदान है। ऋषि दयानन्द ने हिन्दी को, जिसे उन्होंने आर्यभाषा का नाम दिया था, अपनाकर हिन्दी को जो गौरव दिया उसी का परिणाम था कि आर्यसमाज ने अविभाजित भारत में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया था जिसके फलस्वरूप हिन्दी को देश के सभी भागों में समझा व बोला जाने लगा था। देश की आजादी के बाद देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को राष्ट्र भाषा व राजभाषा का गौरव मिला है। इसका श्रेय भी यदि किसी एक

व्यक्ति व संस्था को दिया जा सकता है तो वह ऋषि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित संस्था आर्यसमाज ही है।

सृष्टि के आरम्भ से महाभारतकाल और इसके बाद ऋषि दयानन्द के प्रादुर्भाव तक लगभग 1.96 अरब वर्षों में हमारे समस्त ऋषियों ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त की भाषा संस्कृत थी। जैमिनी ऋषि के बाद ऋषि दयानन्द हुए जिन्होंने ऋषि परम्परा को जीवित कर विलुप्त वेद और वेद ज्ञान का पुनरुद्धार किया था। ऋषि दयानन्द गुजरात में उत्पन्न हुए थे। उनकी मातृ भाषा गुजराती थी। अपनी आयु के 22 वें वर्ष तक वह गुजराती का ही प्रयोग करते थे। गुजराती भाषा पर उनका अधिकार रहा होगा, ऐसा हम स्पष्ट अनुमान कर सकते हैं। 22 वर्ष व उसके बाद वह देश भर में घूमें और धर्म व संस्कृति के विद्वानों के सम्पर्क में आये। उनसे उन्होंने वार्तालाप करने सहित उपदेश ग्रहण किये और उपलब्ध साहित्य का अनुशीलन किया। गुजरात में रहते हुए ही वह संस्कृत पढ़ते रहे थे और उन्हें यजुर्वेद भी स्मरण था। वह एक सिद्ध योगी भी बन गये थे और घंटो तक समाधि लगाने की योग्यता उनको प्राप्त हो चुकी थी। इस पर भी उन्हें और अधिक विद्या की प्रप्ति के प्रति गहरा अनुराग था। वह एक उच्च कोटि के वेदों के विद्वान से विद्याध्ययन करना चाहते थे। इसी क्रम में उन्हें स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी से ज्ञात हुआ था कि उनके एक शिष्य स्वामी विरजानन्द सरस्वती मथुरा में रहते हैं। वह स्वामी दयानन्द की विद्या सम्बन्धी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने सहित आशंकाओं को दूर कर उन्हें सभी साध्य विद्याओं में निपुण कर सकते हैं। उनके मार्गदर्शन से ऋषि दयानन्द सन् 1860 में गुरु विरजानन्द जी के पास मथुरा पहुंचे थे और उनसे विद्यादान की प्रार्थना कर उनके सान्निध्य में लगभग तीन वर्ष रहकर उनसे वेदांगों का अध्ययन किया था। उन्हें अपने गुरु से समस्त विद्यायें व सत्यासत्य को परखने व उसका निर्णय करने की कसौटी भी प्राप्त हुई थी। उन्हीं की प्रेरणा से स्वामी दयानन्द

ने देश व संसार से अविद्या को दूर कर विद्या का प्रचार करने व उस विद्या व सिद्धान्तों को उनके सही स्थान पर प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिया था। स्वामी विरजानन्द जी के साथ स्वामी दयानन्द की गुरुदक्षिणा की यह घटना सन् 1863 में घटी थी। इसके बाद स्वामी दयानन्द ने अपना समस्त जीवन वेदों के प्रचार प्रसार सहित अवैदिक असत्य व अविद्यायुक्त मत—मतानतरो के खण्डन में व्यतीत किया। उन्होंने सन् 1875 में विश्व की वेदों में पूर्ण आस्था रखने वाली सर्वोत्तम संस्था आर्यसमाज की स्थापना की थी जिसका उद्देश्य देश व विदेशों में वेद प्रचार करना था। स्वामी दयानन्द जी ने समाज में व्याप्त व प्रचलित सभी अन्धविश्वासों व सामाजिक कुप्रथाओं का भी अध्ययन किया था और इसका वेद एवं शास्त्रीय प्रमाणों, तर्क एवं युक्तियों से खण्डन कर उनका आवश्यकतानुसार सुधार व उन्मूलन करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया था।

अपने संकल्पों को पूरा करने के लिये ऋषि दयानन्द को व्याख्यान वा उपदेश करने की आवश्यकता थी। वैदिक मान्यताओं के प्रचार व प्रसार के लिये ग्रन्थ लेखन का कार्य भी आवश्यक था। इन सभी कार्यों में उन्होंने अपनी संस्कृत विद्या की विद्वता का मोह व प्रचलित परम्पराओं को छोड़कर देश, समाज व जन—जन का कल्याण करने के लिये हिन्दी भाषा को अपनाया था। आज उनके कार्यों के परिणामस्वरूप ही हिन्दी राष्ट्र भाषा व राजभाषा के गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित है। विश्व में भी हिन्दी की पहचान है। देश का सौभाग्य है कि वर्तमान में इसे एक हिन्दी प्रेमी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी प्राप्त हैं जो अपनी सभी विदेश यात्राओं में विदेशी राज्याध्यक्षों के साथ हिन्दी में ही वार्तालाप करते हैं। इससे हिन्दी का गौरव बढ़ा है। सयुक्त राष्ट्र संघ में भी वर्तमान में भारत के प्रमुख प्रतिनिधि प्रधानमंत्री व विदेश मंत्री हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। इस सबसे हिन्दी का गौरव बढ़ रहा है। आज पूरे विश्व में भारत की पहचान है जिसका कारण व आधार हमारी भाषा

हिन्दी और इस देश का प्राचीन वैदिक ज्ञान है। आज पूरे विश्व ने वैदिक संस्कृति की देन योग को अपना लिया है। 21 जून का दिन विश्व में योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस योग दिवस ने भी भारत को पूरे विश्व में सम्मान दिलाया है। अन्य मत-मतान्तरों के पास योग जैसी न तो उपासना पद्धति है और न ही यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि जैसी शरीर व आत्मा को सुदृढ़ करने वाली व परमात्मा से मिलाने वाली वैदिक अध्यात्म-विद्या है। जिन देशों व मत-मतान्तरों में थोड़ा कुछ अच्छा ज्ञान है भी, वह सब भी वेदों के प्राचीनतम होने से ही वहां पहुंचा है। अतः वेद एवं वैदिक साहित्य सहित योगदर्शन एवं ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि का महत्व निर्विवाद है।

ऋषि दयानन्द ने हिन्दी को अपने प्रचार-प्रसार व लेखन की भाषा बनाकर इसको संस्कृत के समान व उससे भी अधिक गौरव प्रदान किया है। ऋषि दयानन्द ने ही अपने समय में हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिये अंग्रेज सरकार द्वारा गठित हण्टर कमीशन के समक्ष करोड़ों लोगों के हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन देने का एक आन्दोलन भी चलाया था। ऋषि दयानन्द के अनुयायी चाहे उर्दू प्रधान क्षेत्र पंजाब में हों या देश के किसी अन्य भाग में, वह जहां भी रहे हैं वहां उन्होंने आर्यभाषा हिन्दी का ही प्रयोग किया। आर्यसमाज ने देश भर में डी0ए0वी0 स्कूल व कालेज सहित गुरुकुलों की स्थापना की और अपनी सभी संस्थाओं में हिन्दी को अनिवार्य भाषा के रूप में स्थान दिया था। आज भी आर्यसमाजों का सभी कार्य हिन्दी भाषा में ही किया जाता है। यह सब ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से ही होता आया है व हो रहा है। ऋषि दयानन्द की एक देन यह भी है कि विदेशियों ने भी हिन्दी भाषा का अध्ययन किया था। ऋषि दयानन्द का एक ग्रन्थ है ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका। यह ग्रन्थ चारों वेदों के ऋषि दयानन्द के संस्कृत व हिन्दी भाष्य की भूमिका का ग्रन्थ है। इसमें ऋषि दयानन्द ने

संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया है। इसका यह लाभ हुआ है कि जो विद्वान संस्कृत जानते थे व हिन्दी नहीं जानते थे, वह भी भूमिका ग्रन्थ के माध्यम से हिन्दी से परिचित हो गये। इसका कारण यह था संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं की लिपि एक है। संस्कृत पढ़कर हिन्दी को पढ़ा जा सकता है और दोनों पाठ पढ़ने पर हिन्दी समझ में आ जाती है। प्रो0 मैक्समूलर ने तो यहां तक कहा है कि वैदिक साहित्य का आरम्भ ऋग्वेद से और समाप्ति ऋषि दयानन्द की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर होती है। मैक्समूलर के इस वचन को ऋषि दयानन्द के वैदिक साहित्य में योगदान के लिये निष्पक्ष प्रमाण के रूप में जाना व माना जा सकता है। यह बात सत्य है कि प्रो0 मैक्समूलर अपने जीवन के आरम्भ के वर्षों में वेदों व वैदिक धर्म के प्रति पक्षपात रखते थे। वह ईसाई मत व बाइबिल को वेदों से श्रेष्ठ मानते थे परन्तु ऋषि दयानन्द की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को पढ़ने के बाद उनके विचारों में परिवर्तन आया था और अनेक अवसरों पर वह वेद की प्रशंसा करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। इसे हम ऋषि दयानन्द का जादू कह सकते हैं।

ऋषि दयानन्द को महाभारत युद्ध के पश्चात भारत की ऋषि परम्परा का प्रथम ऋषि होने का गौरव प्राप्त है जिसने संस्कृत व हिन्दी को अपनाया और अपने ग्रन्थों को ही हिन्दी में नहीं लिखा अपितु वेदों का संस्कृत व हिन्दी में सत्यार्थों से युक्त युक्ति एवं तर्कसंगत भाष्य करने का अपूर्व कार्य भी किया। वह यदि न आते तो हम देश में प्रचलित अविद्यायुक्त मत-मतान्तरों के कारण देश की दुर्दशा की स्थिति एवं उस दुर्दशा के सुधार का अनुमान व उपाय भी नहीं कर सकते थे। उन्होंने मृत प्रायः वैदिक धर्म एवं संस्कृति जिसे विधर्मियों ने हिन्दू धर्म नाम दिया था, उसकी रक्षा की और उसे संसार का सर्वोत्तम धर्म व संस्कृति सिद्ध किया। हिन्दी दिवस 26 सितम्बर पर हम ऋषि दयानन्द को उनके हिन्दी के प्रति योगदान के लिये सादर स्मरण करते हैं और उनको नमन करते हैं।

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम
तपोवन, नालापानी, देहरादून
द्वारा आयोजित

शरदुत्सव

बुधवार, 12 अक्टूबर 2022 से
रविवार, 16 अक्टूबर 2022 तक



आर्य समाज के संस्थापक,
वेदों के उद्धारक एवं युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती
(1825-1883)



आश्रम सोसाइटी के सदस्यगण : विजय कुमार आर्य, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, श्याम आर्य, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, कुलदीप चौहान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा, प्रदीप दत्ता, अजय पाल, पुष्पा गुसाईं।

कार्यक्रम के प्रमुख सहयोगी : रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया।

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com Web : www.vaidicsadhanashramdehradun.com



शरदुत्सव, योग साधना एवं अथर्ववेद यज्ञ

तदनुसार बुधवार 12 अक्टूबर से रविवार 16 अक्टूबर 2022 तक मनाया जायेगा।

योग साधना निर्देशक एवं : **स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती**
यज्ञ के ब्रह्मा

वैदिक विद्वान : आचार्य डॉ० वेद पाल जी, पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी, डॉ० धन्नजय जी, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, डॉ० सुखदा सोलंकी जी, आचार्य डा० अन्नपूर्णा जी, साध्वी प्रज्ञा जी, पं. सूरत राम शर्मा जी, पं. वेद वसु शास्त्री जी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, श्री महेन्द्र मुनि जी

वेद पाठ : श्रीमद दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौधा के ब्रह्मचारियों द्वारा

यज्ञ तथा अन्य कार्यक्रमों के संचालक : पंडित सूरतराम शर्मा जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी

भजनोपदेशक : श्री दिनेश पथिक जी, महात्मा आर्यमुनि जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी

बुधवार 12 अक्टूबर से रविवार 16 अक्टूबर 2022 तक प्रतिदिन

योग साधना : प्रातः 4.00 से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ : प्रातः 6.30 से 9.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन : प्रातः 10 से 12 बजे तक

यज्ञ एवं संध्या : प्रातः 3.00 से 5.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन : रात्रि 07.00 से 09.00 बजे तक

बुधवार दिनांक 12 अक्टूबर 2022

ध्वजारोहण : प्रातः 9:00 बजे – श्री उमेश शर्मा 'काऊ' जी के करकमलों से
यज्ञ के यजमान : श्री विजय सचदेवा एवं परिवार
कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री चन्द्रगुप्त विक्रम जी
भजन : श्री दिनेश पथिक जी, महात्मा आर्यमुनि जी
प्रवचन विषय प्रातः : ईश्वर उपासना
वक्ता प्रातः सत्र : आचार्य डा० वेद पाल जी, आचार्य आशीष जी, साध्वी प्रज्ञा जी
प्रवचन विषय सांय : वर्तमान में आर्य समाज की प्रासंगिकता
वक्ता सांयकाल सत्र : पं० उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी

युवा सम्मेलन – गुरुवार दिनांक 13 अक्टूबर 2022

- कार्यक्रम के अध्यक्ष : डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
भजन : श्री दिनेश पथिक जी
प्रवचन विषय प्रातः : क्या वैदिक शिक्षा चरिण निर्माण के लिए अनिवार्य है?
वक्ता प्रातः सत्र : आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी योगेश्वरानन्द जी,
आचार्य डा० धन्नजय जी
प्रवचन विषय सायं : श्री राम एवं श्री कृष्ण का जीवन दर्शन
वक्ता सांयकाल सत्र : पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य डा० वेद पाल जी

महिला सम्मेलन – शुक्रवार, दिनांक 14 अक्टूबर 2022

- मुख्य अतिथि : श्रीमती रचना आहूजा जी, प्रधान प्रांतीय आर्य महिला सभा, दिल्ली
कार्यक्रम की अध्यक्ष : साध्वी प्रज्ञा जी
भजन : श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी एवं द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल
की ब्रह्मचारिणियाँ
प्रवचन विषय प्रातः : माता निर्मामा भवति
वक्ता प्रातः सत्र : आचार्य डा० वेद पाल जी, आचार्य डा० अन्नपूर्णा जी,
डा० सुखदा सोलंकी जी
सांयकाल विषय सायं : वर्तमान समय की चुनौतियाँ और समाधान
वक्ता सांयकाल सत्र : पं० उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य

योग एवं उपासना सम्मेलन – शनिवार, 15 अक्टूबर 2022

- कार्यक्रम के अध्यक्ष : स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी
भजन : श्री दिनेश पथिक जी, महात्मा आर्यमुनि जी
प्रवचन विषय प्रातः : वैदिक अष्टांग योग एवं उपासना
वक्ता प्रातः सत्र : आचार्य डा० वेद पाल जी, पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी,
आचार्य आशीष जी, साध्वी प्रज्ञा जी
सांयकाल भजन संध्या : श्री दिनेश पथिक जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी

नोट: शनिवार को प्रातः कालीन यज्ञ एवं भजन प्रवचन के कार्यक्रम तपोभूमि (पहाड़ी पर) आयोजित किये जायेंगे।

रविवार, 16 अक्टूबर 2022

समापन समारोह	: प्रातः 10:00 से 1:00 बजे तक
मुख्य अतिथि	: प्रो. (डॉ.) रूप किशोर शास्त्री, उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
विशिष्ट अतिथि	: डॉ. आनन्द सुमन
सभाध्यक्ष	: श्री विजय कुमार आर्य जी, अध्यक्ष तपोवन आश्रम, देहरादून
कार्यक्रम संचालक	: श्री शैलेष मुनि सत्यार्थी
अतिथियों का स्वागत	: इं० प्रेम प्रकाश शर्मा (सचिव तपोवन आश्रम),
भजन	: श्री दिनेश पथिक जी, महात्मा आर्यमुनि जी
प्रवचन विषय	: नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द
वक्ता	: पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आचार्य डा० वेद पाल जी, आचार्य आशीष जी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, साध्वी प्रज्ञा जी, डॉ अन्नपूर्णा जी
सम्बोधन	: अतिथियों द्वारा सम्बोधन
धन्यवाद ज्ञापन	: आश्रम के अध्यक्ष श्री विजय कुमार आर्य जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन
ऋषिलंगर	: समापन समारोह के उपरान्त ऋषिलंगर की व्यवस्था

आमंत्रित वैदिक विद्वान एवं अतिथिगण

डॉ. नवदीप जी, डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री जी, श्री मनमोहन आर्य जी, श्री एस.एस. वर्मा जी, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी, श्री दयाकृष्ण कांडपाल जी, श्री ओमप्रकाश मलिक जी, श्री सुधीर गुलाटी जी, डॉ. महेश कुमार शर्मा जी, श्री राजकुमार भण्डारी जी, श्री महावीर सिंह जी, श्री अतर सिंह जी, श्री अजय त्यागी जी, श्री धर्मपाल शर्मा जी, श्री तीरथ कुकरेजा जी, श्री संजय जैन जी, श्री पंकज त्यागी जी, श्री नरेन्द्र वर्मा जी, श्री रामपाल रोहिला जी, श्री अरविन्द शर्मा जी, श्री दयानन्द तिवारी जी, डॉ. बृजपाल आर्य जी, श्री नरेन्द्र साहनी जी, श्री ओमप्रकाश महेन्द्रू जी, श्रीमती कान्ता काम्बोज जी, श्री ज्ञानचन्द्र गुप्ता जी, श्री भगवान सिंह जी, श्री शत्रुघन कुमार मौर्य जी, श्री जीतेन्द्र सिंह तोमर जी, श्री महिपाल सिंह जी, श्री रमेश भारती जी, श्री उम्मेद सिंह विशारद जी, श्री रणजीत राय कपूर जी, श्रीमती ऊषा जी, डॉ. विश्वमित्र शास्त्री जी, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी, श्री मानपाल सिंह जी, श्री दिनेश आर्य जी, श्री हाकम सिंह जी, श्रीमती पुष्पा गुसाई, श्री वेद प्रकाश धीमान जी, श्री प्रदीप दत्ता जी, श्री सत्यपाल आर्य जी, श्री केसर सिंह जी, श्री रतन सिंह जी, श्री महिपाल सिंह त्यागी जी, श्री रामबाबू सैनी जी, श्रीमती सविता अग्रवाल जी, श्री बृजेश शर्मा जी, श्री चन्द्रगुप्त विक्रम जी, श्रीमती मीना अग्रवाल जी, श्री सिद्धार्थ अग्रवाल जी, श्री योगेश भाटिया जी, श्री यशवीर आर्य जी एवं सभी आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री एवं सदस्यगण

निवेदक

विजय कुमार आर्य, इं. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, श्याम आर्य, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, कुलदीप चौहान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा, प्रदीप दत्ता, अजय पाल, पुष्पा गुसाई, रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया

एवं समस्त सदस्य वैदिक साधन आश्रम सोसायटी, देहरादून।

वृद्धावस्था के रोग तथा उनके आयुर्वेदिक उपचार

-स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती

आज हम देखते हैं कि कोई भी देश भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों से अछूता नहीं है। यह दावा करना ही कठिन है की हमारे परिवार में सब स्वस्थ हैं। आज विशेषकर हम वृद्धावस्था में होने वाले कुछ रोगों के विषय में थोड़ी जानकारी व उनका संक्षिप्त समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं। बड़ी आयु में विशेषकर व्यक्ति निम्नलिखित समस्याओं से ग्रसित होते हैं।

1. पुरानी कब्ज

- 1) औपचारिकता निभाने के लिए कुछ भी खाते-पीते रहना।
- 2) मानसिक तनाव के कारण पाचनतंत्र का ठीक न रहना।
- 3) तले-भुने पदार्थों का अत्यधिक सेवन करना। 4) शारीरिक श्रम का अभाव।
- 5) अनियमित दिनचर्या।

उपचार:

- 1) आँतों की शुद्धि के लिए यदा-कदा सादा हल्के गुनगुने पानी का एनिमा लेना चाहिए।
- 2) सप्ताह में दो या तीन दिन 100 ग्राम पपीता, 100 ग्राम बेल फल का गूदा, 2 चम्मच शहद, 2 चम्मच भुना हुआ चौकर (आटे की भूसी) सभी को आपस में मिलाकर प्रातः राश (नाश्ते) के समय सेवन करें, मात्रा आवश्यकता के अनुसार घटायें या बढ़ाये, यह आँतों की खुश्की के लिए वरदान सिद्ध होगा।
- 3) गुलाब का गुलकंद 25 ग्राम के लगभग गर्म दूध के साथ सोने से पूर्व खायें। प्रातः शौच खुलकर आयेगा। इसे आप गर्म पानी के साथ भी ले सकते हैं।
- 4) रात्रि में 10 से 15 मुनक्के पानी में भिगोकर रख दें। उन्हें प्रातः काल अच्छी तरह मसलकर छानकर पीने से कब्ज दूर होती है।

2. जोड़ों के दर्द (Arthritis)

यह रोग अत्यधिक चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक्स, आइस क्रीम, आलस्य, प्रमाद, अनियमित दिनचर्या, एसिडिटी तथा पुरानी कब्ज के कारण होता है।

उपचार:

- 1) चार अंजीर, 8 मुनक्के रात को एक गिलास पानी में भिगोयें, प्रातःकाल को इस पानी को पी लें तथा अंजीर और मुनक्कों को चबा-चबाकर खायें। प्रातः व सायं दोनों समय भी सेवन कर सकते हैं।
- 2) हार-श्रृंगार के पत्ते 2, अमरुद के पत्ते 2, तुलसी के 10 पत्ते, एक गिलास पानी में पकाकर छानकर रख लें, गुनगुना रहने पर 1-2 चम्मच शहद मिलाकर पियें।
- 3) 50 ग्राम काला चना व 1 चम्मच मेथीदाना रात को डेढ़ गिलास पानी में भीगा दें, प्रातःकाल में थोड़ी हल्दी, जीरा, थोड़ा सा अदरक, 5-7 साबुत काली मिर्च डालें व उनका सूप बना लें। एक गिलास रहने पर चना व मेथी निकालकर इसका सूप पिएं। 10 दिन तक प्रतिदिन सेवन करें।
- 4) मेथी चूर्ण 5-5 ग्राम प्रातः और सायं सादा पानी में लेने से जोड़ों के दर्द में लाभ मिलता है।

निषेध: चावल, दालें, चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक्स, दही, फ्रिज की सभी टंडी वस्तुएं, मिर्च, मसाले इत्यादि न लें।

3. बवासीर

यह रोग पुरानी कब्ज का विकृत स्वरूप है। अत्यधिक मिर्च मसाले, मिठाइयाँ, शराब व अन्य मादकद्रव्य व अत्यधिक तले भुने पदार्थों के खाने से होता है। अत्यधिक लम्बे समय तक प्रतिदिन बैठे रहने से भी हो सकता है।

उपचार:

- 1) खून आता हो तो दूब घास का रस 50 ग्राम में थोड़ी देशी खांड या नागकेशर 10 ग्राम मिलाकर पी लें। दर्द की अवस्था में भाँग की धुई दें।
- 2) खून न आता हो तो 15 ग्राम हरडें गौमूत्र में पीसकर गुड़ के साथ दिन में तीन बार लें। खून आता हो तो शौच के समय फिटकरी से गुदा को धोयें।
- 3) नींबू रस एक चम्मच रात को गुदा में सीरिंज से चढ़ाना।
- 4) बट की जड़ को जलाकर उसी राख में एरण्ड तेल मिलाकर गुदा द्वार में रखें। गेंदे की पत्ती पीसकर गर्म कर गुदा द्वार पर रखें।
- 5) बादी बवासीर में प्याज को पीसकर तथा घी में भूनकर लाल करें एवं पान के पत्ते पर रखकर गुदा द्वार पर बांधें।
- 6) बवासीर के मस्से हो जाने पर मूली को पत्तों सहित कुचलकर तथा निम्बू रस मिलाकर गुदा के भीतर रखकर सोयें, 15 दिन में मस्से गिर जायेंगे।
- 7) कच्चे पपीते का दूध रुई में मिलाकर गुदा में रखने से भी लाभ होता है।

निषेध: शराब, तम्बाकू, गुटखा, धूम्रपान, तली चीजें, दालें, मिठाईयाँ, चाय, काफी, कोल्ड ड्रिंक्स, मिर्च मसाले सब कुछ बंद कर दें।

4. मधुमेह (Diabetes)

यह रोग मानसिक तनाव, कब्ज व अत्यधिक वातानुकूलित वातावरण में रहने, अधिक आराम करने, अत्यधिक मिठाइयों का सेवन, योगमय जीवन के प्रति अरुचि, नींद की कमी आदि के कारण, अग्नाशय (Pancreas) की कार्यप्रणाली में बाधा उत्पन्न होने से होता है।

उपचार:

- 1) आम के 2 पत्ते, बेल के 2 पत्ते, जामुन के 2 पत्ते की चटनी बनाकर एक सप्ताह प्रातः व

सायं सेवन करें।

- 2) 50 ग्राम काला चना व 1 चम्मच मेथीदाना रात को डेढ़ गिलास पानी में भीगा दे, प्रातःकाल में थोड़ी हल्दी, जीरा, थोड़ा सा अदरक 5-7 साबुत काली मिर्च डाले व उनका सूप बना लें। एक गिलास रहने पर चना मेथी निकालकर इसका सूप पिएं। 10 दिन तक प्रतिदिन सेवन करें।
- 3) शलजम की सब्जी शुगर में लाभदायक होती है।
- 4) आम के नए कोमल पत्तों को छाया में सुखाकर चूर्ण रूप में लेने से लाभ मिलेगा।
- 5) जौ ढाई किलो, काला चना एक किलो, मेथी एक पाव, जामुन की गुठली एक पाव, सभी का चूर्ण बना लें, इसकी रोटी बनाकर खाने से शुगर ठीक हो जाती है।

5. अनिद्रा (नींद की कमी)

अनियमित दिनचर्या, कब्ज, गैस, एसिडिटी, ऋण का बोझ, अपमान, ध्यान की कमी, अशांति, एक ही बात बार-बार मस्तिष्क में घूमते रहना, मानसिक अवसाद (डिप्रेशन) के कारण नींद नहीं आती है।

उपचार:

- 1) जल नेति, रबर नेति, तेल नेति, व मुलेठी के पानी से एक सप्ताह कुंजर क्रिया करें।
- 2) सिर पर चिकनी गीली मिट्टी का टोप लगाएं।
- 3) माथे पर ठंडे पानी की पट्टी बांधकर 21 बार ओ३म् ध्वनि करें।
- 4) सोने से पहले पानी न पिएं।
- 5) प्रातः भ्रमण व व्यायाम करें।
- 6) सोने से पूर्व नासिका में लौकी के तेल की 2-बूंदें डालें।

6. ब्लड प्रैशर

- 1) लहसुन की 2 कलियाँ प्रातः खाली पेट प्रतिदिन पानी के साथ खाएं।

- 2) लौकी का रस पिएं।
- 3) नारियल पानी पिएं।
- 4) नाशपाती का रस पिएं।
- 5) अर्जुन की छाल 100 ग्राम, दालचीनी 100 ग्राम, दोनों का चूर्ण बनाकर रख ले। प्रातः सायं एक कप पानी में एक तिहाई चम्मच उबालकर पीने से कोलेस्ट्रॉल व ब्लड प्रेशर सामान्य होता है। लो ब्लड प्रेशर में 10 मुनक्के बीज निकालकर थोड़ा नमक मिलाकर तवे पे भूनकर चबा-चबाकर खाएं।
- 6) कोलेस्ट्रॉल की समस्या में 1 किलो नींबू, 1 किलो अदरक, 1 किलो लहसुन तीनों का रस निकालकर आधे लीटर सेब के सिरके में

मिला लें। चारों को धीमी आग पर पकायें तथा गाढ़ा हो जाने पर उतार दें। ठण्डा होने के बाद आधा किलो शहद मिलाकर शीशी में भरकर रखें। 1 चम्मच खाली पेट गरम पानी के साथ सेवन करें।

7. पौरुष ग्रंथि (Prostate)

- 1) कासनी 10 ग्राम आधा गिलास पानी में 1 घंटे के लिए भिगोयें फिर उसके बाद छानकर पीसकर उसी पानी में मिलाकर पी जाएं।
- 2) ठण्डे पानी का कटी स्नान करें।
- 3) प्रोस्टेट पर भाप से सिकाई के बाद बर्फ रगड़ें।
- 4) एक सप्ताह के लिए अन्न छोड़ दें।

गायत्री मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गायत्री मंत्र निम्नलिखित पुस्तकों में बार-बार आया है:

ऋग्वेद-	1 बार	गोपथ ब्राह्मण-	1 बार
यजुर्वेद-	4 बार	दैवत ब्राह्मण-	1 बार
सामवेद-	3 बार	शतपथ ब्राह्मण-	3 बार
तैत्तिरीय संहिता-	3 बार	वृहदाण्यको उपनिषद्-	1 बार
मैत्रायणी संहिता-	2 बार	नारायणी उपनिषद्-	1 बार
तैत्तिरीय आरण्यक-	2 बार	वराही उपनिषद्-	1 बार
जैमिनीय उपनिषद्-	1 बार	कौशीतकी गृहसूत्र-	1 बार
श्वेताश्वेत्तर उपनिषद्-	1 बार	साममन्त्र ब्राह्मण-	1 बार
आश्वलायन श्रौतसूत्र-	5 बार	खादिर गृहसूत्र-	1 बार
शांखायन श्रौतसूत्र-	5 बार	आपस्तम्ब गृहसूत्र-	2 बार
आपस्तम्ब श्रौतसूत्र-	1 बार	बौधायन धर्मशास्त्र-	1 बार
शांखायन गृहसूत्र-	3 बार	मैत्रेय उपनिषद्-	1 बार
मानव गृहसूत्र-	3 बार	बार श्रौत सूत्र-	1 बार
मैत्रेय ब्राह्मण-	4 बार	मानव धर्मशास्त्र-	1 बार
कौशितकी ब्राह्मण-	2 बार		

गायत्री रहस्य से साभार

आर्य समाज के आज के गौरव स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

स्वामी धर्मानन्द जी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि दृढ़ संकल्प एवं सच्ची निष्ठा से व्यक्ति जीवन में ऐसे-ऐसे आश्चर्यजनक कार्य करने में भी सक्षम हो जाता है जो दूसरों के लिए एक उदाहरण बन जाते हैं। सन् 1940 में एक छोटे से गाँव में श्री जुगलाल जी तथा श्रीमती दाखोदेवी के यहां जन्म लेने वाला धर्मदेव बचपन से ही मेधावी तथा कुछ नया कर गुजरने की भावना को अपने हृदय में संजोए रखता था। प्रसिद्ध आर्यसमाजी श्री दरियावसिंह जी की प्रेरणा से बच्चों को एकत्रित करके प्रातः चार बजे प्रभात फेरी निकालकर गांव के लोगों को प्रेरणा देकर स्कूल खुलवाना इसी बात का प्रमाण है। आपने अपने पड़ोसी आर्य सज्जन के सम्पर्क में आकर यज्ञोपवीत ग्रहण किया तो प्रतिदिन व्यायाम, संध्या एवं यज्ञादि करना आरंभ कर दिया। बचपन के ये संस्कार जब पल्लवित-पुष्पित हुए तो इन्होंने सितम्बर 1956 में गुरुकुल झज्जर में प्रवेश ले लिया। अपनी कुशाग्र बुद्धि द्वारा यहां भी पांच वर्ष की अल्पावधि में ही मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा अष्टाध्यायी, सम्पूर्ण यजुर्वेद आदि भी कण्ठस्थ कर लिए। कुछ समय तक इन्होंने गुरुकुल झज्जर में सहायक मुख्याधिष्ठाता के रूप में कार्य करके अपनी कार्यकुशलता का परिचय भी दिया। अब इनके सामने दो मार्ग थे या तो घर-गृहस्थी बसाकर संसार को सुसंस्कारित सन्तान देते या फिर गृहस्थ के बन्धन से उपराम होकर सर्वथा साधना एवं सेवा क मार्ग चुनते। घरवालों की इच्छा तो यही थी कि ये अपनी घर-गृहस्थी बसाएं मगर गुरुकुल के पावन वातावरण में इनके हृदय में जो वैराग्य एवं विवेक के अंकुर प्रस्फुटित हो चुके थे उन्होंने इन्हें पूर्ण समर्पण के साथ अपनी साधना एवं जग की सेवा करने का मार्ग चुनने के लिए ही प्रेरित किया और अगस्त 1962 को इन्होंने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली।



दीक्षित होने के बाद कुछ समय तक इन्होंने गुरुकुल में ही अध्यापन कार्य किया और बाद में गोरक्षा आन्दोलन में कूद पड़े तथा जेल में भी रहे। आपके मन में प्रारम्भ से ही पिछड़े क्षेत्र में कुछ विशेष कार्य करने की भावना थी तथा इसे कार्यरूप देने के लिए आप जेल से निकलने के बाद 1967 में स्वामी ब्रह्मानन्द जी के निवास पर ओडिशा के गुरुकुल वैदिक आश्रम पानपोस में आ गए और फिर बाद में 1968 में ओडिशा के अति निर्धन एवं अकालग्रस्त क्षेत्र कालाहाण्डी के एक छोटे से गांव आमसेना में गुरुकुल आरंभ किया। अकालग्रस्त क्षेत्र तथा अलग भाषा के इस क्षेत्र में कार्य करना जैसे असंभव सा ही था मगर आपने अपने संकल्प और कर्मठता से इस कार्य को संभव करके दिखाया। यह जानकर प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य

ही होगा कि 1968 में मात्र अड़सठ रूपए तथा आधा बोरा चावल दान मिलने पर कार्य आरम्भ किया और आज यहां पर दो सौ ब्रह्मचारी, तीस अध्यापक, पचास कार्यकर्त्ता सेवाभाव से अध्ययन अध्यापन के साथ स्वामी जी अब तक एक सौ से भी अधिक दीक्षार्थियों को नैष्ठिक, वानप्रस्थ, संन्यास की दीक्षा दे चुके हैं।

यही नहीं इन्होंने शुद्धि आन्दोलन को सक्रियता प्रदान की तथा इसके लिए अनेक स्थानों पर आर्यसमाजों का गठन भी किया। जहां आरम्भ में मात्र 10-15 समाजें थी वहां अब दो-सौ से भी अधिक आर्य समाजें हैं तथा आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन भी हो चुका है। अब तक पुनर्मिलन (शुद्धि) आन्दोलन द्वारा 70-80 हजार ईसाई वैदिक धर्म की शरण में आ चुके हैं। स्वामी आनन्दबोध जी के निधन के बाद कुछ कारणों से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का संगठन चरमराया तो इसमें भी स्वामी जी ने आगे बढ़कर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा बाद में अपने त्याग का परिचय देते हुए स्वेच्छा से प्रधान पद के प्रत्याशी न बनकर अपने गुरु स्वामी ओमानन्द जी को सभा का प्रधान बनवाया। आज भी सार्वदेशिक सभा का विवाद पटरी पर नहीं बैठा है मगर स्वामी जी महाराज भी अन्य ऋषि भक्तों के समान इस स्थिति से आहत हैं और निरन्तर इस प्रयास में हैं कि सभा के समस्त विवाद समाप्त हो ताकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कार्य को द्रुतगति से

मिलकर आगे बढ़ाया जा सके।

स्वामी जी अपने गुरुकुल के विद्यार्थियों के साथ अत्यधिक स्नेहिल व्यवहार करते हैं। उनके इस प्रकार के व्यवहार के कारण ही विद्यार्थी भी अपने आचार्य का आदर और सम्मान करते हैं। वास्तव में गुरुकुलों में गुरु-शिष्य में इस प्रकार का आपसी सौहार्द एवं सामंजस्य नितान्त आवश्यक है क्योंकि इससे भी समरसता स्थापित होती है। सन् 2000 में स्वामी जी अत्यधिक अस्वस्थ हो गए थे मगर अब स्वस्थ होने पर पुनः अपने कार्यक्षेत्र में उसी सक्रियता के साथ जुट गए हैं, बल्कि अब तो उनका कार्यक्षेत्र और भी अधिक बढ़ गया है। उन्होंने एक कन्या गुरुकुल की स्थापना की है तथा वैदिक साहित्य प्रकाशन के कार्य के साथ-साथ धर्मार्थ चिकित्सालय का कार्य भी चला रखा है। स्वामी जी लगभग अठठारह संस्थाओं का संचालन कर रहे हैं। मनीषियों की यह बात सत्य है कि जीवन की सार्थकता मानव सेवा करने और यशस्वी बनने में ही है। स्वामी जी ने मनीषियों की इस उक्ति को चरितार्थ किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। उपनिषद् के ऋषि का सार्थक जीवन के बारे में कहना है—'अहं ब्रह्म अहं यज्ञ अहं लोकः' अर्थात् हम महान् बनें, हमारा जीवन यज्ञमयी भावनाओं से परिपूर्ण हो और हम संसार में यशस्वी बनकर जीएं। स्वामी धर्मानन्द जी ने अपने जीवन में इस सार्थकता को परिपूर्ण किया है।

सूचना

पातंजल योगधाम न्यास, आर्यनगर, ज्वालापुर हरिद्वार में ध्यान योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन

दिनांक 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2022 तक

सभी बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की तपस्थली पातंजल योगधाम आश्रम में स्वामी मेधानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2022 तक ध्यान, योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन होने जा रहा है। आप सभी इस शिविर में पधार कर अष्टांग योग का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। शिविर से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए कृपया आश्रम के मंत्री श्री मोहन लाल "आर्य पुष्प" मो0-9413047474 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

आयुर्वेदानुसारी स्वास्थ्यरक्षक आरोग्य सूत्र

-आचार्य बालकृष्ण

1. रात्रि को जल्दी सोना और प्रातः जल्दी (सूर्योदय से पहले) जागना स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।
2. स्वास्थ्य का अर्थ केवल शरीर का स्वस्थ्य होना ही नहीं, अपितु मन और मस्तिष्क का प्रसन्न रहना भी है।
3. प्रातः काल उठने के बाद कुछ समय (10 ये 15 मिनट) ध्यान या ईश्वर का स्मरण जीवन में प्रसन्नता व शान्ति देता है।
4. स्वस्थ्य रहने और रोगों से बचने के लिए सदा पथ्य सेवन (हितकारी भोजन) करना चाहिए, क्योंकि पथ्य-अपथ्य सेवन करने वाले व्यक्ति को औषधि की आवश्यकता नहीं रहती।
5. भोजन करते समय मन पूर्णतः शान्त और प्रसन्न रहना चाहिए। सारे दिन में कम से कम भोजन का समय तो मनुष्य को केवल अपने लिए सुरक्षित रखना चाहिए।
6. भोजन सदा समय पर करना चाहिए। पहले खाये हुए भोजन के पाचन हुए बिना भोजन कर लेना स्वास्थ्य के लिए घातक है। यह आयुर्वेद का सुनहरा नियम है कि-भूख लगने पर ही मित भोजन करें, अन्यथा एक समय लंघन (उपवास) कर लें।
7. रात्रि के समय दही का सेवन करना और दिन के समय (ग्रीष्म-ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतुओं में सोना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
8. व्यायाम करना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, अतः यह दिनचर्या का अनिवार्य अंग होना चाहिए, परन्तु अपनी शारीरिक शक्ति से अधिक व्यायाम या श्रम करना बहुत हानिकारक है।
9. मोटापा और पतलापन, दोनों ही अवांछित हैं, परन्तु मोटापा अपेक्षाकृत अधिक कष्टदायक है, क्योंकि यह अनेक रोगों की जड़ है, अतः इससे सावधान रहें।
10. रोग को कभी भी छोटा नहीं समझना चाहिए। ध्यान न देने पर सामान्य रोग भी भयंकर रूप धारण कर सकता है।
11. स्वास्थ्य के लिए हितकारी भोजन का सेवन करें, ऋतु (मौसम) के अनुसार खायें, भूख से कुछ कम भोजन करें।
12. प्रातः उठकर 1-2 गिलास गुनगुना पानी पीयें, यही उषःपान है। गुनगुने पानी में आधा चम्मच नींबू का रस एवं 1 चम्मच शहद मिलाकर पीने से विशेष लाभ होता है। सुबह खाली पेट चाय व कॉफी का सेवन कभी न करें।
13. मलत्याग करते समय दाँतों को दबाकर या भींचकर रखने से वृद्धावस्था में भी दाँत नहीं हिलते।
14. प्रातः मुँह में पानी भरकर ठण्डे जल से आँखों में छींटे मारें। अँगूठे से मुँह में स्थित लातु की सफाई करने से आँख, कान, नाक एवं गले के रोग नहीं होते।
15. स्नान करने से पूर्व दोनों पैरों के अँगूठों में सरसों का शुद्ध तेल मलने से वृद्धावस्था तक नेत्रों की ज्योति कमजोर नहीं होती। प्रातः नंगे पाँव हरी घास पर टहलें, इससे आँखों की रोशनी बढ़ती है। सप्ताह में एक दिन पूरे शरीर की तिल या सरसों के तेल से मालिश करें तथा पैर के अँगूठों व पैर के पंजों की भी मालिस करें।
16. रात्रि को सोने से पहले तथा प्रत्येक बार भोजन लेने के बाद दाँतों के बीच में फँसे अन्न-कणों को कुल्ला करके साफ करें।
17. नहाने के पानी में नींबू का रस मिलाकर नहाने से शरीर की दुर्गन्ध दूर होती है।
18. प्रतिदिन शौच-स्नान के पश्चात् योगासन,

प्रणायाम आदि नियमित रूप से करें। प्रणायाम करने से सभी प्रकार के रोग दूर होते हैं तथा शरीर स्वस्थ व मन शान्त रहता है और आत्मबल बढ़ता है।

19. भोजन सुपाच्य, सात्विक, हल्का तथा रेशेयुक्त खाद्य, अंकुरित अन्न, फलों व दलिया का सेवन करें व भोजन को चबा-चबा कर खायें।
20. भोजन के उपरान्त कम से कम 10 मिनट तक वज्रासन में बैठें तथा यदि संभव हो तो रत्रि के भोजन के बाद थोड़ा भ्रमण करें।
21. दिन में कम से कम 8 से 12 गिलास(2.5 से 3 लीटर) पानी जरूर पीयें।
22. सदैव रीढ़(कमर) को सीधी रखकर बैठें। जीमन पर बैठकर बिना सहारे उठें।
23. नाखून हमेशा छोटे व साफ रखें तथा नाखूनों को दाँतों से कभी न काटें।
24. खाने के दौरान पानी न पीयें। यदि भोजन में तरल पदार्थ कम हों तो भोजन के बीच में थोड़ा पानी पी सकते हैं, अन्यथा खाने के आधा घण्टा पहले तथा आधे से 1 घण्टे बाद ही पानी का सेवन करें।
25. भोजन से पूर्व ईश्वर का स्मरण करें। अन्न देने वाले उस प्रभु का धन्यवाद करके भोजन को उसका प्रसाद मान कर ग्रहण करें।
26. भोजन में हरी सब्जी व सलाद का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग करें। अधिक गर्म और अधिक ठण्डी वस्तुएँ पाचन क्रिया के लिए हानिकारक हैं। भोजन में मिर्च मसालों का प्रयोग कम करें। प्रतिदिन मौसम के फलों का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। फलों को भोजन के साथ न लेकर अलग से भोजन के पश्चात् खायें।
27. मल, मूत्र, छींक आदि के वेगों को कभी नहीं रोकना चाहिए, वेग रोकने से रोग उत्पन्न होते हैं।
28. जीवन में वाणी, व्यवहार व विचार के दोषों को

दूर करने के लिए तथा जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रतिदिन रात को सोते समय थोड़ी देर धैर्यपूर्वक आँखें बंद करके आत्म-निरीक्षण करें, इसमें अपने दोष व आचरण की समीक्षा करें और जीवन में अष्टांग योग को अपनाने के लिए पुरुषार्थ करें।

29. रात्रि में मुँह ढक कर न सोयें। रात को कमरों में वायु-संचार को पूर्णतया अवरुद्ध न करें। बाईं करवट सोने से दायां स्वर चलता है, जो भोजन पचाने में सहायक होता है।
30. पेट के बल लेटकर पढ़ना या सोना नहीं चाहिए।
31. शिर में तेल की मालिस करने से मन शान्त होता है, तथा नींद अच्छी आती है।
32. पीने के पानी, खाद्य पदार्थ स्वच्छ, साफ तथा ताजे होने चाहिए क्योंकि अस्वास्थ्यकर ढंग कई प्रकार के रोगों को निमंत्रण देते हैं।
33. बालों को धोने के तुरन्त बाद अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए।
34. हर समय नाक खुजाना या गुप्तांगों में खुजली करना शरीर में कीटाणु एवं कृमि होने का संकेत देते हैं।
35. हर समय उंगलियां चटकाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।
36. मासिक धर्म के समय सम्भोग नहीं करना चाहिए तथा अत्यधिक शारीरिक श्रम करने से बचना चाहिए क्योंकि इससे वात विकृत होकर शरीर में दोषों की उत्पत्ति करता है।
37. मासिक धर्म के समय शरीर में नाजुकता (संवेदनशीलता) व शरीर में विविध तरह के रोगाणुओं की उपस्थिति होती है। अतः उस समय अतिश्रम, भारी कार्य तथा अस्पृश्यता का ध्यान रखते हुए भोजन आदि निर्माण व अति कोमल शैय्या आदि में शयन का निषेध किया गया है। ऐसा न करने पर अनेक रोगों की उत्पत्ति होने की सम्भावना रहती है।

BASANTA MAL SAT PRAKASH

Manufactures of : All Kinds Shawls & Lohies

M : 094171-36756, 70877-54848

GHASS MANDI, LUDHIANA

हमारे पास बेबी सॉफ्ट शॉल, पूजा शॉल, स्टॉल शॉल, मिक्सचर लोई, जैकेट शॉल, कढ़ाई शॉल, कैशमीलोन प्लेन क्लॉथ, चैक शर्टिंग क्लॉथ में हर प्रकार की वैरायटी बनती है और रेट भी कम हैं। कृपया एक बार जरूर सम्पर्क करें।

ARYA TEXTILE

Manufactures of :

All Kinds Handloom Bed Sheets & Furnishing Fabrics

M : 98963-19774, 95412-88174, 98964-01919

Specialist in : BABY BLANKETS & READYMADE CURTAINS

हम Readymade Curtains, Jackets, Guddad, Loi, Mat, Baby Soft Shawls, Baby Blankets, Acrylic Blankete, Rajai Khol (Dohar), Rajai, comforter, AC Set, Velvet Joda & 3D Bed Sheets, Dhari etc. आदि के निर्माता हैं। इसके अलावा मिंग व पोलर कम्बल (Mink & Polar) आदि भी बेचते हैं और रेट भी कम हैं। कृपया एक बार जरूर सम्पर्क करें।

Factory :

Opp. RK School,
Kutani Road, Panipat-132103



Shop :

665/4, Pachranga Bazar,
Panipat-132103

Baby Blankets / Mink Blankets / Quilts / Comforters / Jackets / Duvet Covers / Shawls / Fleece Blankets

कल्कि अवतार समाज में फैला महाझूट और भ्रमजाल

-डा० डी.के. गर्ग

‘कहावत’ : श्रीमद्भागवत पुराण के बारहवें स्कन्द में लिखा है कि भगवान का कल्कि अवतार कलियुग के अंत और सतयुग के संधि काल में होगा। शास्त्रों की माने तो प्रभु श्री राम और श्री कृष्ण का अवतार भी अपने-अपने युगों के अंत में हुआ था। इसलिए जब कलियुग का अंत निकट आ जायेगा तब भगवान कल्कि जन्म लेंगे। कल्कि को हिन्दू भगवान विष्णु के दसवें अवतार और विष्णु का भावी या अंतिम अवतार माना गया है।

पुराणकथाओं के अनुसार कलियुग में पाप की सीमा पार होने पर विश्व में दुष्टों के संहार के लिये कल्कि अवतार प्रकट होगा। श्रीमद्भागवत महापुराण के बारहवें स्कन्ध के द्वितीय अध्याय में भगवान के कल्कि अवतार की कथा विस्तार से दी गई है जिसमें यह कहा गया है कि “चंदौली ग्राम में श्यामलाल नामक श्रेष्ठ ब्राह्मण के पुत्र के रूप में कल्कि भगवान का जन्म होगा। वह देवदत्त नाम के घोड़े पर आरूढ़ होकर अपनी कराल करवाल (तलवार) से दुष्टों का संहार करेंगे तभी सतयुग का प्रारम्भ होगा।”

चंदौली ग्राम: मुख्यस्य ब्राह्मणस्यमहात्मनः

भवनेविष्णुयशसः कल्कि प्रादुर्भाविष्यति।

‘विश्लेषण’: ईश्वर के अवतार लेने का भ्रम किस तरह फैलाया गया है उसका ये एक जीता जागता उदाहरण है जिसका मतलब है कि हमने अतीत से कुछ नहीं सीखा। सोमनाथ का मंदिर ऐसी मूर्खता के कारण गजनवी ने लूटा और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। ऐसे ही भ्रम के कारण दुनिया में आज एक भी हिन्दू राष्ट्र नहीं है और हिन्दू राष्ट्र धीरे धीरे समाप्त हो गए हैं। आज अफगानिस्तान से भी हिन्दू समाप्त हो गए। एक मौलवी का दावा था कि जो हिन्दू मिलेगा उसको काट दिया जायेगा। सभी इस्लामिक आतंकवादियों से परिचित हैं जिनके आतंक का कहर दिल दहला देने वाला है जिनको सभी जानते हैं।

भगवान गुण वाचक शब्द है जिसका अर्थ गुणवान होता है। यह “भग्” धातु से बना है, भग के ६ अर्थ हैं:— १—ऐश्वर्य २—वीर्य ३—स्मृति ४—यश ५—ज्ञान और ६—सौम्यता जिसके पास ये ६ गुण हैं वह भगवान है। संस्कृत भाषा में भगवान “भंज” धातु से बना है जिसका अर्थ है:— सेवायाम् । जो सभी की सेवा में लगा रहे कल्याण और दया करके सभी मनुष्य जीव, भूमि, गगन, वायु, अग्नि, नीर को दूषित ना होने दें। सदैव स्वच्छ रखे वो भगवान का भक्त होता है भ=भक्ति ग=ज्ञान वा=वास न=नित्य, जिसे हमेशा ध्यान करने का मन करता है। अतः ये गुण एक मानव मे हो सकते हैं।

लोग कहते हैं कि ईश्वर अवतार कब लेगा? तो बंधु ये निरा पाखंड हैं कि ईश्वर अवतार लेगा। क्योंकि जो अवतार लेता है तो आप ईश्वर को सर्वज्ञ नहीं कह सकते। क्योंकि यदि वह सर्वज्ञ है तो उसे पता होना चाहिये था कि भविष्य मे ऐसा प्राणी उत्पन्न होगा अतः मैं इसे पैदा ही न करूँ!!!! दूसरा यदि अवतार लेता है तो वह सर्वशक्तिशाली भी नहीं रहा क्योंकि इस अनन्त ब्रह्मांड मे मानव से करोडो गुना शक्तिशाली जीव उपस्थित हैं लेकिन फिर भी यदि वह शरीर धारण करता है तो वह सर्वशक्तिशाली भी नहीं क्योंकि जिसने उसे प्राण दिया है वह प्राण भी तो ले सकता है।

अब कुछ लीला वाले भाई आयेंगे और कहेंगे कि ईश्वर की वह लीला थी। तो बंधु जिस समय मुगल हमारे मंदिर तोड रहे थे, हमारी माताओं बहनों का हरण कर रहे थे लाखों लोग काटे जा रहे थे तब कहाँ था आपका अवतारी ईश्वर? लीला वाले प्रभु को अफगानिस्तान, सीरिया, इराक, सोमालिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान भेज दो जहाँ अब मंदिर नहीं रहे, माँ बहनों की इज्जत लूटी जा रही है, सरे आम हाथ पैर काट दिए जाते हैं।

आप साँई को अवतारी ईश्वर घोषित करते हो जो कि एक कसाई था। तो बंधु अंग्रेजों के विरुद्ध उसने कौन सी धर्म रक्षा की? जिस समय

कश्मीरी पंडित (जहाँ आपकी अवतारी देवी, ज्वाला रहती हैं) भगाये जा रहे थे, मुसलमान बनने का विरोध करने वालों को काटा जा रहा था तब कहाँ थी आपकी देवीशक्ति?

देखिये सीधी सरल बात है ईश्वर वह है जो नित्य है अर्थात् आज है कल भी था और कल भी होगा। वह अजन्मा है अर्थात् वह जन्म मरण से मुक्त है। फिर क्षणभंगुर अवतार लेना गुण ईश्वर का नहीं रह जायेगा। सनातनधर्मियों को समझने की आवश्यकता है कि ईश्वर इस चराचर जगत में हस्तक्षेप नहीं करता, और इसी नासमझी के कारण हमारा भारतवर्ष न केवल गुलाम हुआ बल्कि अपना कई गुना भू-भाग भी खो बैठा।

कल्कि और अवतार के चक्कर में हमने देश के 10 टुकड़े करवा दिए करोड़ों हिन्दू मुस्लिम ईसाई बन गए। कोई कल्कि वल्कि नहीं आ रहा यह सब अंध पाखण्ड अज्ञान और कायर बनाने का प्रोपगेंडा है, हिन्दुओं के मूल मौलिक शास्त्र वेद है न कि पुराण। वेद में ईश्वर सर्वव्यापक है अजन्मा है फिर अवतार कैसे होगा?

आचार्य प्रमोद कृष्णन खुद को हिन्दू साधु कहते हैं और कल्कि पीठाधीश्वर के रूप में जाने जाते हैं। इनका दावा है कि कलियुग के अंतिम चरण में कल्कि भगवान अवतार लेंगे और धरती से पापियों का नाश करके सतयुग की स्थापना करेंगे।

देखा जाये तो हिन्दू धर्म के पतन का एक मुख्य कारण भी यही है कि यहाँ आस्था के नाम पर हर एक वह कार्य किया जा रहा है जिसका वेदों में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। मजार पर जाते हैं, पीर पर चादर चढ़ा रहे हैं, वेदों में कहाँ वर्णित है? इसके अलावा हर रोज नये नये बाबा बना रहे हैं, जब इनसे काम नहीं चलता तो दुसरें मतों के चर्च से लेकर बंगाली बाबाओं तक सब में कूद जाते हैं। जबकि चार वेद हिन्दुओं के एकमात्र धर्मग्रंथ है। वेदों का सार है उपनिषद और इन सबमें किसी कल्कि अवतार, पीर, मजार का कोई जिक्र नहीं है।

दरअसल प्रमोद कृष्णन का वर्तमान में भगवान कल्कि के नाम पर उत्तरप्रदेश में संभल ग्राम में एक मठ है। यहाँ सक्रिय कल्कि वाटिका

नामक संगठन का दावा है कि कल्कि अवतार के प्रकट होने का समय नजदीक आ गया है। वे एक सफेद घोड़े पर बैठ कर आएंगे और राक्षसों का नाश कर देंगे। अब ये राक्षस कौन हैं ये भी समस्या है क्योंकि रामायण और महाभारत में जो राक्षसों के चेहरे दिखाए गये जो गाँव के गाँव उजाड़ दिया करते थे, जो ऋषि मुनियों की साधना से लेकर यज्ञशाला भंग किया करते थे, उन चेहरों के राक्षस तो अब नहीं दीखते! हाँ काम के अनुसार कुछ और राक्षस अब खड़े हो गये हैं जो इस काम को कर रहे हैं। क्या कल्कि उनका संहार करेंगे?

अगर कोई इनसे पूछे कि इसका तार्किक आधार क्या है तो ये लोग नाराज होकर जवाब देते हैं कि आस्था में तर्क का कोई स्थान नहीं है मूर्ख? कल्कि अवतार भी किसी समय सीमा में बंधा नहीं है उसके प्राकट्य के अपने मापदंड हैं। प्रमोद कृष्णन स्वयं लोक सभा का चुनाव हार चुका है उसकी कल्कि भगवान ने कोई मदद नहीं की। आज भी साम दाम दंड भेद और धर्म परिवर्तन के द्वारा भी सांसद बनाये जाने के लिए परेशान हैं।

अभी करीब 5120 वर्ष कलियुग के बीत चुके हैं और 4 लाख 26 हजार 881 वर्ष के करीब अभी बाकी है, अभी से ही कल्कि की पूजा, आरती और प्रार्थना शुरू हो गई है। यह अवतार भविष्य में होगा या नहीं यह अभी अनिश्चित है, लेकिन लोगों को कौन रोक सकता है पूजा करने से, कुछ लोग तो अभिताभ और रजनीकांत और सोनिया गाँधी की भी पूजा भी करते हैं।

अब इन लोगों का कमाल देखिये कि इन्होंने अपनी एक पुराण भी बना ली है जिसका नाम है कल्कि पुराण। इसके अनुसार कल्कि अवतार कलियुग व सतयुग के संधिकाल में होगा। यह अवतार 64 कलाओं से युक्त होगा। यानि कल्कि अवतार हो चुका है या नहीं हुआ ये लोग खुद भी अभी पक्के नहीं हैं। लेकिन इतना जरूर पक्का है कि अपने महापुरुष भगवान रामचन्द्र जी, योगेश्वर श्रीकृष्ण जी, के बताये मार्ग से दूर करने तथा मुशायरों में जाकर अल्लाह मोला नबी चिल्लाने वालों ने जो अभी पैदा नहीं हुआ उसकी अभी से ही पूजा जरूर आरम्भ कर दी है।

बताया जाता है कि बाबा अपने स्कूलों में खूबसूरत जवान लड़कियों को टीचर के तौर पर भर्ती करता है। उसके स्कूल की एक टीचर के लापता होने का मामला भी सुर्खियों में रहा है। कुछ साल पहले पुलिस छापे में पकड़ी गई दो कॉलगर्ल्स ने भी इस बाबा का नाम लिया था। बताते हैं कि उनके पास सबसे महंगी लग्जरी गाड़ियों का जखीरा है। लेकिन एक अनुमान के मुताबिक उनका साम्राज्य इससे कई गुना ज्यादा का है।

ये सभी अवतार भारत में ही क्यों होते हैं ? क्योंकि यहाँ अंधविश्वास सबसे ज्यादा है और विज्ञान तथा प्रकृति के विरुद्ध अनपढ़ पंडित ,कथा वाचक द्वारा रोचक कहानी के साथ कही बातें ज्यादा अच्छी लगती है और हम कर्म कांड से भागते हैं। सत्य, अहिंसा का पालन करने से पीछे रहते हैं।

प्रमोद कृष्णन भले ही खुद को हिंदू धर्म का गुरु बताता हो लेकिन अपने भाषणों में वो हिंदू धर्म को काफी कुछ बुरा-भला कहता हैं । मजहबी लोगों के बड़े-बड़े जलसों में वो बतौर हिंदू धर्म गुरु शामिल होते हैं और वहां भी ज्यादातर वक्त यही बताते हैं कि मुस्लिम धर्म किस तरह हिंदू धर्म से अच्छा है। यही वजह है कि राजनीति से लेकर सोशल मीडिया तक उनके ज्यादातर फॉलोअर्स

मुसलमान हैं। लेकिन राजनीति और पाखंड से जुड़े इस राजनितिक बाबा का असली चरित्र कोई बताने को तैयार नहीं है, जो कल्कि अवतार के नाम पर बड़ा धंधा जमाये बैठा है और कायर और डरपोक लोग भी सोच रहे है कि उनकी रक्षा करने को आज से 4 लाख 26 हजार 881 साल बाद कोई कल्कि आएगा।

इसलिए अभी भी किसी अवतार के चक्कर में कब तक सतुर्मुर्ग कि तरह रेत में मुह घुसा कर जीओगे? मुह बाहर निकालो और चारों तरफ देखो शत्रु नजर आ जायेगा।

श्रीमान कल्कि अवतार जब आएगा देखी जाएगी लेकिन अब कलयुग के साढे ५१२० साल हुए हैं और कल्कि अवतार कलयुग के ५०० सौ वर्ष रह जाएंगे तब आएगा हमें कल्कि भगवान के दर्शन नहीं होंगे कृपया करके हमें खुद ही कल्कि भगवान वाले कार्य करने होंगे और धर्म रक्षा के लिए कार्य करना होगा यदि धर्म सुरक्षित रहेगा तभी हमारा राष्ट्र सुरक्षित होगा और राष्ट्र सुरक्षित होगा तो हम सुरक्षित होंगे इसीलिए इस देश में मुसलमानों और ईसाई का रहना देश के लिए सबसे बड़ा खतरा है जो दिन प्रतिदिन धर्म परिवर्तन करवा रहे है और कई राज्य में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए है। क्या शत्रु आपको नजर नहीं आ रहे है?

सर्व श्री दीप चन्द विजय कुमार,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9837444469

दीप कोल्ड स्टोर,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9457438575

दीप मार्बल्स,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9412468691

दान दाताओं की सूची

1 नवम्बर 2021 से 30 अप्रैल 2022 तक

1	श्री सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा, दिल्ली	11000	30	श्री मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून	2000
2	श्री प्रकाश चन्द्र आर्य, देहरादून	1100	31	श्री ओमप्रकाश पॉलीवाल, आगरा	5100
3	श्री अशोक वर्मा जी, देहरादून	5100	32	श्री दीपक वर्मा, फरीदाबाद	5000
4	श्री रमानन्द शर्मा जी, देहरादून	1100	33	श्रीती कमला गुप्ता, फरीदाबाद	1000
5	श्री प्रेम सिंह आर्य जी, दिल्ली	1000	34	श्रीमती नीलम गिरधर, फरीदाबाद	1100
6	श्री अशोक गुट जी, पतंजली हरिद्वार	5100	35	श्री विमल सचदेवा, फरीदाबाद	1000
7	श्री हरि भक्त, मुम्बई	5000	36	श्री वाई.एन. बहल, फरीदाबाद	2100
8	डा0 जयदीप आर्य, देहरादून	1000	37	श्रीमती संगीता विज, फरीदाबाद	1000
9	श्री दयानन्द सैनी जी, देहरादून	1100	38	स्वराज घई, फरीदाबाद	1000
10	श्री प्रदीप कुमार मिश्रा, देहरादून	1000	39	श्रीमती निर्मल अरोड़ा, फरीदाबाद	1100
11	श्री राम भज मदान जी, दिल्ली	5000	40	श्रीमती पुष्पा आर्य जी, देहरादून	1100
12	श्री के0के0 चावला जी, देहरादून	1100	41	श्री रोहित वर्मा जी, देहरादून	10000
13	श्री विनेश आहूजा जी, दिल्ली	11000	42	श्री सत्यकेतु जी,	1100
14	श्री आदित्य वर्धन जी, देहरादून	5100	43	श्री सूरज प्रकाश चावला, बैंगलौर	2000
15	श्रीमती निर्मला शर्मा, नोयडा	1100	44	श्री सूरज प्रकाश चावला, बैंगलौर	5100
16	मा0 पुलकित, देहरादून	1100	45	श्री बह्ममुनि जी, हरियाणा	2100
17	श्री अभिषेक ढिंगरा जी, दिल्ली	3100	46	श्री देवान्स आर्य, फरीदाबाद	3100
18	कु0 आस्था आर्य, दिल्ली	1100	47	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000
19	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000	48	श्रीमती एस. चड्ढा जी, दिल्ली	10000
20	श्री अरुण मलिक जी, दिल्ली	1100	49	श्री अर्जुन देव सरदाना, नोयडा	2100
21	श्री देवदत्त शर्मा जी, दिल्ली	1100	50	श्री भानू प्रताप जी, देहरादून	1000
22	श्री दिनेश सेठी जी, दिल्ली	21000	51	श्री पंकज जी, बनारस	1000
23	नागरिक कल्याण विकास ट्रस्ट, दे0दू0	51000	52	श्री जगमोहन सिंह जी, देहरादून	4000
24	मुंजाल शोआ लि0, गुड़गांव	11000	53	श्रीमती कश्मीरा सिंह जी, देहरादून	1000
25	श्री आनन्द बख्सी जी, दिल्ली	5100	54	श्रीमती शान्ति देवी, हरिद्वार	1000
26	श्रीमती उषा कुकरेजा जी, दिल्ली	2100	55	श्री राजीव कुमार जी, देहरादून	2000
27	आचार्य आशीष जी, देहरादून	5100	56	श्री सूरज प्रकाश चावला, बैंगलौर	21000
28	श्री यशपाल मेघराज जी, अहमदाबाद	2500	57	श्री सूरज प्रकाश चावला, बैंगलौर	1000
29	श्रीमती सरला सेठ, दिल्ली	1000	58	श्री वेद प्रकाश गौतम, हरिद्वार	3100

59	श्री सत्येन्द्र आर्य, दिल्ली	2100	91	श्री रामअवतार जी, नोयडा	2000
60	श्रीमती कमलेश जी, देहरादून	11000	92	केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, नई दिल्ली	1100
61	श्री दिनेश वाधवा जी, दिल्ली	3100	93	श्रीमती पुष्पा गुसाईं जी, देहरादून	1000
62	अरसिका आर्या जी, दिल्ली	2100	94	श्री वेद प्रकाश मिगलानी जी, दिल्ली	2100
63	श्री कुल्दीप जी, देहरादून	1100	95	मै0 तारा चन्द एण्ड कम्पनी, मुजफ्फरनगर	11000
64	श्री जब्बर सिंह जी, गुरुग्राम	2200	96	श्रीमती मीना अग्रवाल जी, देहरादून	20000
65	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000	97	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी, देहरादून	11000
66	श्री धीरज वालिया जी, कुरुक्षेत्र	1100	98	श्री विशेष शर्मा जी, देहरादून	2000
67	श्री एन.एस. आहलूवालिया जी, हर्बटपुर	2000	99	श्री सार्थक शर्मा जी, देहरादून	1000
68	श्री अशोक बजाज जी, दिल्ली	3000	100	श्रीमती ईश्वरी देवी, देहरादून	2100
69	श्रीमती सरला गुप्ता जी, दिल्ली	3000	101	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000
70	श्रीमती उषा खन्ना जी, दिल्ली	4000	102	श्रीमती राजबाला आर्य, अलीगढ़	2000
71	श्री पवन जी, रोहतक	2100	103	श्री पंकज विज जी, दिल्ली	2000
72	श्री देव प्रकाश राणा, रायपुर	1100	104	श्री संदीप विज जी, दिल्ली	2000
73	श्रीमती रजनी बाला, हिसार	1100	105	श्री सुनील थापर जी, फरीदाबाद	2000
74	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000	106	श्री रामकिसन जी, पानीपत	2000
75	श्री बाल चन्द तुलसी, दिल्ली	2100	107	श्री विमल जी, मु0 नगर	1100
76	श्री अरविन्द कुमार, शुभाष नगर	1000	108	श्री केवल सिंह आर्य, पानीपत	2100
77	श्रीमती नीरू खट्टर जी, दिल्ली	31000	109	श्रीमती सारिका मल्होत्रा, देहरादून	1100
78	श्री रिसभ शर्मा, नई दिल्ली	1000	110	श्री पी0डी0 गुप्ता जी, देहरादून	1100
79	श्री रामकिसन जी, पानीपत	1100	111	श्री हरिचन्द बतरा जी, गुड़गांव	5100
80	स्वामी जयमनानन्द जी, बागेश्वर	1000	112	श्री विजय कुमार आर्य जी, कीरतपुर	10000
81	श्री शिव कुमार ग्रोवर, दिल्ली	2100	113	अंशू गोयल जी, कीरतपुर	10000
82	श्री राम किसन जी, पानीपत	25000	114	श्री वरुण गोयल जी, कीरतपुर	10000
83	श्री दिनेश सेठी जी, दिल्ली	31000	115	श्रीमती मल्लिका गोयल जी, कीरतपुर	10000
84	श्री नितिन ठाकुर जी, दिल्ली	10000	116	श्री विराज गोयल जी, कीरतपुर	5000
85	श्रीमती कृष्णा ठाकुर जी, दिल्ली	10000	117	श्रीमती कान्ता सब्बरवाल जी, देहरादून	1100
86	महिला आर्य समाज देहरादून	1100	118	श्री दीपक वर्मा, फरीदाबाद	5100
87	कु0 वेदासी अग्रवाल, देहरादून	2100	119	श्रीमती सुमन नागपाल जी, मोदीनगर	2000
88	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000	120	श्री शिव कुमार टूटेजा जी, फरीदाबाद	5000
89	श्री वेदमुनि वानप्रस्थी, देहरादून	3100	121	श्री आनन्द स्वरुप चावला जी, फरीदाबाद	5000
90	श्री श्याम आर्य जी, पानीपत	21000	122	श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी, फरीदाबाद	3000

123	श्री प्रेम बहल जी, फरीदाबाद	2000
124	श्री हजारी लाल आर्य, अलीगढ़	5000
125	श्री भीष्म कुमार तनेजा, गुरुग्राम	2000
121	श्री ईश्वर दत्त धीमान जी, गुरुग्राम	2000
127	श्रीमती सन्तोष मदान जी, गुरुग्राम	2000
128	श्री विश्वबन्धु गुप्ता जी, मोदीनगर	5000
129	श्री सुनील कुमार भाटिया, मोदीनगर	2000
130	श्री रजनीश कपूर जी, दिल्ली	5000
131	आचार्य सानन्द जी, पानीपत	5000
132	श्रीमती शान्ति देवी, पानीपत	5000
133	श्रीमती नीलम गुप्ता, दिल्ली	3000
134	श्री प्रेमनाथ बजाज, दिल्ली	2100
135	श्री रघुनाथ एवं श्रीमती कमला देवी, तपोवन	100000
136	श्री मयंक जी, हाथरस	2000
137	मधु आर्य, दिल्ली	1100
138	श्री रघुनाथ एवं श्रीमती कमला देवी, तपोवन	3100
139	महिला पतंजली योग समिति, कर्नाटक	7500
140	श्री अजेय पाल जी, तपोवन	1500
141	श्री अनिल मदान, दिल्ली	1000
142	श्रीमती कुसुम जसवाल, मुम्बई	1500
143	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी, देहरादून	2100
144	श्रीमती कमलेश आर्य, दिल्ली	2500

145	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000
146	श्रीमती रेखा त्यागी, ऋषिकेश	1100
147	श्रीमती राजगोयल जी, देहरादून	2000
148	श्री चन्दन कुमार जी, जमशेदपुर	1500
149	श्री कुलभूषण देव, लाड़पुर देहरादून	5100
150	श्री योगेश रस्तोगी जी, देहरादून	1100
151	डा० जे.के. गुप्ता जी, देहरादून	5000
152	श्रीमती ईषा गुप्ता जी, दिल्ली	1000
153	श्रीमती कृष्णा कालरा जी, भिवानी	1100
154	श्रीमती कृष्णा सेठी जी, दिल्ली	4000
155	श्री विनोद चन्द दुबे, अहमदाबाद	5100
156	श्री सुरेन्द्र एव श्रीमती विद्या जी, दिल्ली	2100
157	श्रीमती उषा सेठी जी, दिल्ली	1100
158	प्राचार्य बट्टी विशाल कॉलेज, फरुखाबाद	15000
159	श्री ज्ञान प्रकाश कुकरेजा जी, करनाल	2000
160	श्री रमेश चन्द्र टांगड़ी, देहरादून	3000
161	श्रीमती सुदेश टांगड़ी, देहरादून	2000
162	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000
163	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी, देहरादून	11000
164	श्रीमती ललिता पालीवाल, आगरा	11000
165	माता निर्मल मदान जी, दिल्ली	10000

यज्ञ से वर्षा

अन्नाश्वदन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।

यज्ञाश्वदवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ३ ।। 14 ।।

भावार्थः सम्पूर्ण प्राणियों का जीवन अन्न से चलता है और अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है और यज्ञ से वर्षा होती है। इसलिए सब मनुष्य यज्ञ करें।

व्याख्याः एक समय था जब समय पर वर्षा होती थी। कभी अकाल नहीं पड़ता था। जब संसार में पुण्यात्मा ज्यादा होंगे तो उनके पुण्य के प्रभाव से ही प्रकृति प्रभावित होती है और सब जीव सुख और आनन्द में रहते हैं। यज्ञ द्वारा वर्षा भी कराई जा सकती है। प्रत्येक नगर-नगर, ग्राम में यज्ञ हो तो समय पर वर्षा होगी। वायु मण्डल अति सुगन्धित रहेगा। (इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रातः सांय यज्ञ करना चाहिए।)

गीता पढ़ो, आगे बढ़ो से साभार

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified



हमारे उत्पाद

- ★ स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- ★ शॉक एब्जॉर्बर्स
- ★ फ्रन्ट फोर्कस
- ★ गैस स्प्रिंग्स / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्ज्ड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंग्स की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS-16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैनुफैक्चरिंग प्लांट हैं – गुडगाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक



MARUTI
SUZUKI



YAMAHA



मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9-11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया

गुडगाँव-122015, हरियाणा

दूरभाष :

0124-2341001, 4783000, 4783100

ईमेल : msladmin@munjalshowa.net

वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL
SHOWA


*With Best
Compliments From*



Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

Fit Hai Boss

www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals

Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India  Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE